Fortnightly per copy Rs. 4/- ओ३म् 18th April 2021

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

जलियाँवाला बाग हत्याकांड के शहीदों व उनकी शहादत को विनम्र श्रद्धांजलि

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना

जलियाँवाला बाग हत्याकांड के शहीदों व उनकी शहादत को विनम्र श्रद्धांजलि

जलियाँवाला बाग हत्याकांड भारत के पंजाब प्रान्त के अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर के निकट जलियाँवाला बाग में १३ अप्रैल १६१६ यबैसाखी के दिनद्ध हुआ था। रौलेट एक्ट का विरोध करने के लिए एक सभा हो रही थी जिसमें जनरल डायर नामक एक अँग्रेज अहृफिसर ने अकारण उस सभा में उपस्थित भीड़ पर गोलियाँ चलवा दीं जिसमें ४०० से अधिक व्यक्ति मरे और १६६६ से अधिक घायल हुए। अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में ४८४ शहीदों की सूची हैए जबकि जलियांवाला बाग में कुल ३८८ शहीदों की सूची है। ब्रिटिश राज के अभिलेख इस घटना में २०० लोगों के घायल होने और ३७६ लोगों के शहीद होने की बात स्वीकार करते है जिनमें से ३३७ पुरुषए ४१ नाबालिग लड़के और एक ६.सप्ताह का बच्चा था। अनाधिकारिक आँकड़ों के अनुसार १००० से अधिक लोग मारे गए और २००० से अधिक घायल हुए।

यदि किसी एक घटना ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर सबसे अधिक प्रभाव डाला था तो वह घटना यह जघन्य हत्याकाण्ड ही था। माना जाता है कि यह घटना ही भारत में ब्रिटिश शासन के अंत की शुरुआत बनी।

१६६७ में महारानी एलिजाबेथ ने इस स्मारक पर मृतकों को श्रद्धांजलि दी थी। २०१३ में ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरहृन भी इस स्मारक पर आए थे। विजिटर्स बुक में उन्होंनें लिखा कि ष्ब्रिटिश इतिहास की यह एक शर्मनाक घटना थी।

घटनाक्रम ऐतिहासिक दिवस १३ अप्रैल १६१६ को बैसाखी का दिन था। बैसाखी वैसे तो पूरे भारत का एक प्रमुख त्योहार है परंतु विशेषकर पंजाब और हरियाणा के किसान सर्दियों की रबी की फसल काट लेने के बाद नए साल की खुशियाँ मनाते हैं। इसी दिनए १३ अप्रैल १६६६ को दसवें और अंतिम गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। इसीलिए बैसाखी पंजाब और आस.पास के प्रदेशों का सबसे बड़ा त्योहार है और सिख इसे सामूहिक जन्मदिवस के रूप में मनाते हैं। अमृतसर में उस दिन एक मेला सैकड़ों साल से लगता चला आ रहा था जिसमें उस दिन भी हजारों लोग दूर.दूर से आए थे।

अंग्रेजों की मंशा

प्रथम विश्व युद्ध य१६१४.१६१८द्ध में भारतीय नेताओं और जनता ने खुल कर ब्रिटिशों का साथ दिया था। १३ लाख भार तीय सैनिक और सेवक यूरोपए अफरी का और मिडल ईस्ट में ब्रिटिशों की तरफ से तैनात किए गए थे जिनमें से ४३ए००० भारतीय सैनिक युद्ध में शहीद हुए थे। युद्ध समाप्त होने पर भारतीय नेता और जनता ब्रिटिश सरकार से सहयोग और नरमी के रवैये की आशा कर रहे थे परंतु ब्रिटिश सरकार ने महृण्टेगू.चेम्सफोर्ड सुधार लागू कर दिए जो इस भावना के विपरीत थे।

लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पंजाब के क्षेत्र में ब्रिटिशों का विरोध कुछ अधिक बढ़ गया था जिसे भारत प्रतिरक्षा विधान य १६१५

द्ध लागू कर के कुचल दिया गया था। उसके बाद १६१८ में एक ब्रिटिश जज सिडनी रहलेट की अध यक्षता में एक सेडीशन समिति नियुक्त की गई थी जिसकी जिम्मेदारी ये अध्ययन करना था कि भारत मेंए विशेषकर पंजाब और बंगाल में ब्रिटिशों का विरोध किन विदेशी शक्तियों की सहायता से हो रहा था। इस समिति के सुझावों के अनुसार भारत प्रतिरक्षा विधान य १६१५ द्ध का विस्तार कर के भारत में रहलट एक्ट लागू किया गया थाए जो आजादी के लिए चल रहे आंदोलन पर रोक लगाने के लिए थाए जिसके अंतर्गत ब्रिटिश सरकार को और अधिक अधिकार दिए गए थे जिससे वह प्रेस पर सेंसरशिप लगा सकती थीए नेताओं को बिना मुकदमें के जेल में रख सकती थीए लोगों को बिना वहरण्ट के गिरफ्तार कर सकती थीए उन पर विशेष ट्रिब्यूनलों और बंद कमरों में बिना जवाबदेही दिए हुए मुकदमा चला सकती थीए आदि। इसके विरोध में पूरा भारत उठ खड़ा हुआ और देश भर में लोग गिरफ्तारियां दे रहे थे।

गांधी तब तक दक्षिण अफ्रीका से भारत आ चुके थे और धीरे.ध ीरे उनकी लोकप्रियता बढ़ रही थी। उन्होंने रोलेट एक्ट का विरोध करने का आह्वान किया जिसे कुचलने के लिए ब्रिटिश सरकार ने और अधिक नेताओं और जनता को रोलेट एक्ट के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया और कड़ी सजाएँ दीं। इससे जनता का आक्रोश बढ़ा और लोगों ने रेल और डाक.तार.संचार सेवाओं को बाधित किया। आंदोलन अप्रैल के पहले सप्ताह में अपने चरम पर पहुँच रहा था। लाहौर और अमृतसर की सड़कें लोगों से भरी रहती थीं। करीब ५०००० लोग जलियांवाला बाग में इकट्ठे थे। ब्रिटिश सरकार के कई अधिकारियों को यह १८५७ के गदर की पुनरावृत्ति जैसी परिस्थिति लग रही थी जिसे न होने देने के लिए और कुचलने के लिए वो कुछ भी करने के लिए तैयार थे।

अंग्रेजों के अत्याचार

आंदोलन के दो नेताओं सत्यपाल और सैफुद्दीन किचलू को गिरफ्तार कर कालापानी की सजा दे दी गई। १० अप्रैल १६१६ को अमृतसर के उप कमिश्नर के घर पर इन दोनों नेताओं को रिहा करने की माँग पेश की गई। परंतु ब्रिटिशों ने शांतिप्रिय और सभ्य तरीके से विरोध प्रकट कर रही जनता पर गोलियाँ चलवा दीं जिससे तनाव बहुत बढ़ गया और उस दिन कई बैंकोंए सरकारी भवनों टाउन हाल रेलवे स्टेशन में आगजनी की गई। इस प्रकार हुई हिंसा में ५ यूरोपीय नागरिकों की हत्या हुई। इसके विरोध में ब्रिटिश सिपाही भारतीय जनता पर जहाँ.तहाँ गोलियाँ चलाते रहे जिसमें ८ से २० भारतीयों की मृत्यु हुई। अगले दो दिनों में अमृतसर तो शाँत रहा पर हिंसा पंजाब के कई क्षेत्रों में फैल गई और ३ अन्य यूरोपीय नागरिकों की हत्या हुई। इसे कुचलने के लिए ब्रिटिशों ने पंजाब के अधिकतर भाग पर मार्शल लह लागू कर दिया।

काण्ड का विवरण

कांड के महीनों बाद १६१६ में बाग का दृश्य बैसाखी के दिन १३ अप्रैल १६१६ को अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक सभा रखी गईए जिसमें कुछ नेता भाषण देने वाले थे। शहर में कर्फ्यू लगा हुआ थाए फिर भी इसमें सैंकड़ों लोग ऐसे भी थेए जो बैसाखी के मौके पर परिवार के साथ मेला देखने और शहर घूमने आए थे और सभा की खबर सुन कर वहां जा पहुंचे थे। जब नेता बाग में पड़ी रोड़ियों के ढेर पर खड़े हो कर भाषण दे रहे थे तभी ब्रिगेडियर जनरल रेजीनहल्ड डायर ६० ब्रिटिश सैनिकों को लेकर वहां पहुँच गया। उन सब के हाथों में भरी हुई राइफलें थीं। नेताओं ने सैनिकों को देखाए तो उन्होंने वहां मौजूद लोगों से शांत बैठे रहने के लिए कहा।

गोलीबारी

सैनिकों ने बाग को घेर कर बिना कोई चेतावनी दिए निह:थे लोगों पर गोलियाँ चलानी शुरु कर दीं। १० मिनट में कुल १६५० राउंड गोलियां चलाई गईं। जलियांवाला बाग उस समय मकानों के पीछे पड़ा एक खाली मैदान था। वहाँ तक जाने या बाहर निकलने के लिए केवल एक संकरा रास्ता था और चारों ओर मकान थे। भागने का कोई रास्ता नहीं था। कुछ लोग जान बचाने के लिए मैदान में मौजूद एकमात्र कुएं में कूद गएए पर देखते ही देखते वह कुआं भी लाशों से पट गया। जलियांवाला बाग कभी जलली नामक आदमी की संपत्ति थी।

हताहत

बाग में लगी पट्टिका पर लिखा है कि १२० शव तो सिर्फ कुए से ही मिले। शहर में कर्फ्यू लगा था जिससे घायलों को इलाज के लिए भी कहीं ले जाया नहीं जा सका। लोगों ने तड़प.तड़प कर वहीं दम तोड़ दिया। अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में ४८४ शहीदों की सूची हैए जबकि जलियांवाला

बाग में कुल ३८८ शहीदों की सूची है। ब्रिटिश राज के अभिलेख इस घटना में २०० लोगों के घायल होने और ३७९ लोगों के शहीद होने की बात स्वीकार करते है जिनमें से ३३७ पुरुषए ४१ नाबालिग लड़के और एक ६.सप्ताह का बच्चा था। अनाधिकारिक आँकड़ों के अनुसार १००० से अधिक लोग मारे गए और २००० से अधिक घायल हुए। आधिकारिक रूप से मरने वालों की संख्या २६८ बताई गई जबकि पंडित मदन मोहन मालवीय के अनुसार कम से कम १३०० लोग मारे गए। स्वामी श्रद्धानंद के अनुसार मरने वालों की संख्या १५०० से अधिक थी जबकि अमृतसर के तत्कालीन सिविल सर्जन डह्क्टर स्मिथ के अनुसार मरने वालों की संख्या १८०० से अधिक थी।

करतूत बयानी

मुख्यालय वापस पहुँच कर ब्रिगेडियर जनरल रेजीनह्ल्ड डायर ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों को टेलीग्राम किया कि उस पर भारतीयों की एक फौज ने हमला किया था जिससे बचने के लिए उसको गोलियाँ चलानी पड़ी। ब्रिटिश लेफ्टिनेण्ट गवर्नर मायकल ओ डायर ने इसके उत्तर में ब्रिगेडियर जनरल रेजीनह्ल्ड डायर को टेलीग्राम किया कि तुमने सही कदम उठाया। मैं तुम्हारे निर्णय को अनुमोदित करता हूँ। फिर ब्रिटिश लेफ्टिनेण्ट गवर्नर मायकल ओ डायर ने अमृतसर और अन्य क्षेत्रों में मार्शल लह लगाने की माँग की जिसे वायसरह्य लह्र्ड चेम्सफोर्ड नें स्वीकृत कर दिया।

जाँच

इस हत्याकाण्ड की विश्वव्यापी निंदा हुई जिसके दबाव में भारत के लिए सेक्रेटरी अह्फ स्टेट एडविन मह्ण्टेगू ने १९१९ के अंत में इसकी जाँच के लिए हंटर कमीशन नियुक्त किया। कमीशन के सामने ब्रिगेडियर जनरल रेजीनह्ल्ड डायर ने स्वीकार किया कि वह गोली चला कर लोगों को मार देने का निर्णय पहले से ही ले कर वहाँ गया था और व्रह उन लोगों पर चलाने के लिए दो तोपें भी ले गया था जो कि उस संकरे रास्ते से नहीं जा पाई थीं। हंटर कमीशन की रिपोर्ट आने पर १९२० में ब्रिगेडियर जनरल रेजीनह्ल्ड डायर को पदावनत कर के कर्नल बना दिया गया और अक्रिय सूचि में रख दिया गया। उसे भारत में पोस्ट न देने का निर्णय लिया गया और उसे स्वास्थ्य कारणों से ब्रिटेन वापस भेज दिया गया। हाउस अह्फ कह्मन्स ने उसका निंदा प्रस्ताव पारित किया परंतु हाउस अह्फ लह्र्ड ने इस हत्याकाण्ड की प्रशंसा करते हुये उसका प्रशस्ति प्रस्ताव पारित किया। विश्वव्यापी निंदा के दबाव में बाद को ब्रिटिश सरकार ने उसका निंदा प्रस्ताव पारित किया और १९२० में ब्रिगेडियर जनरल रेजीनह्ल्ड डायर को इस्तीफा देना पड़ा। १९२७ में प्राकृतिक कारणों से उसकी मृत्यु हुई। उधमसिंह नगर पहले नैनीताल जिले में था। लेकिन अक्टूबर १९९५ में इसे अलग जिला बना दिया गया। इस जिले का नाम स्वर्गीय उधम सिंह के नाम पर रखा गया है। उधम सिंह स्वतंत्रता सेनानी थे। जलियांवाला बाग हत्याकांड होने के पश्चात् इन्होंने ही जनरल डायर की हत्या की थी।ख्र इस हत्याकांड की जाँच के लिये कांग्रेस ने मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की।

विरोध

गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने इस हत्याकाण्ड के विरोध स्वरूप अपनी नाइटहुड को वापस कर दिया। आजादी के लिए लोगों का हौसला ऐसी भयावह घटना के बाद भी पस्त नहीं हुआ। बल्कि सच तो यह है कि इस घटना के बाद आजादी हासिल करने की चाहत लोगों में और जोर से उफान मारने लगी। हालांकि उन दिनों संचार और आपसी संवाद के वर्तमान साधनों की कल्पना भी नहीं की जा सकती थीए फिर भी यह खबर पूरे देश में आग की तरह फैल गई। आजादी की चाह न केवल पंजाबए बल्कि पूरे देश के बच्चे.बच्चे के सिर चढ़ कर बोलने लगी। उस दौर के हजारों भारतीयों ने जलियांवाला बाग की मिट्टी को माथे से लगाकर देश को आजाद कराने का दृढ़ संकल्प लिया। पंजाब तब तक मुख्य भारत से कुछ अलग चला करता था परंतु इस घटना से पंजाब पूरी तरह से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित हो गया। इसके फलस्वरूप गांधी ने १९२० में असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया।

प्रतिघात

माइकल ओश्डायर जब जलियां वाला बाग में यह हत्याकांड हो रहा थाए उस समय उधमसिंह वहीं मौजूद थे और उन्हें भी गोली लगी थी। उन्होंने तय किया कि वह इसका बदला लेंगे। १३ मार्च १९४० को उन्होंने लंदन के कैक्सटन हह्ल में इस घटना के समय ब्रिटिश लेफ्टिनेण्ट गवर्नर माइकल ओ ड्वायर को गोली चला के मार डाला। ऊधमसिंह को ३१ जुलाई १९४० को फाँसी पर चढ़ा दिया गया। गांधी और जवाहरलाल नेहरू ने ऊधमसिंह द्वारा की गई इस हत्या की निंदा करी थी।

भगत सिंह

इस हत्याकांड ने तब १२ वर्ष की उम्र के भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। इसकी सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से १२ मील पैदल चलकर जालिया वाला बाग पहुंच गए थे।

स्मारक

१९२० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा एक प्रस्ताव पारित होने के बाद साइट पर एक स्मारक बनाने के लिए एक ट्रस्ट की स्थापना की गई थी। १९२३ में ट्रस्ट ने स्मारक परियोजना के लिए भूमि खरीदी थी। अमेरिकी वास्तुकार बेंजामिन पोल्क द्वारा डिजाइन किया गया एक स्मारकए साइट पर बनाया गया था और १३ अप्रैल १९६१ को जवाहरलाल नेहरू और अन्य नेताओं की उपस्थिति में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने इसका उद्घाटन किया था।

शिक्षा से संभव है सामाजिक परिवर्तन

भीमराव रामजी अंबेडकर का जन्म १४ अप्रैल, १८९१ को महार (दलित) जाति में हुआ था, जिन्हें अछूत माना जाता था और जिनके साथ सामाजिक आर्थिक भेदभाव किया जाता था। उन्हें काफी पहले यह अहसास हो गया कि सामाजिक और आर्थिक समानता के लक्ष्य को हासिल करने के और आर्थिक समानता के लक्ष्य को हासिल करने के लिए वह शिक्षा को हथियार बनाएँगे। आज उनका जीवन हर व्यक्ति के लिए जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। पीएचडी सहित कुल २६ डिग्रियाँ और खिताब उनके नाम के साथ जुड़े हैं। डॉ. अंबेडकर का मानना था कि शिक्षा मनुष्य को उच्च स्तर तक पहुँचाती है और शिक्षा ही समाज में परिवर्तन और प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। डॉ. अंबेडकर को विदेश में अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की डिग्री हासिल करने वाले पहले भारतीय होने का गौरव प्राप्त हैं। वह अर्थशास्त्र में पहले पीएचडी और दक्षिण एशिया में अर्थशास्त्र में पहले 'डबल डाक्टरेट' धारक भी हैं।

अंबेडकर ने जिस महा सत्याग्रह की कल्पना की और उसे अंजाम दिया, वह न केवल अस्पृश्यता और जाति आधारित भेदभाव के मुद्दों को केंद्र में लाया, बल्कि यह उनके राजनीतिक दर्शन का प्रतीक परिभाषित घटना में से एक भी था। उच्च जाति के हिन्दुओं की प्रतिक्रिया ने डॉ. अंबेडकर को धार्मिक रूपांतरण पर विचार करने पर मजबूर किया। एक समय उन्होंने सिख धर्म में परिवर्तित होने का फैसला कर लिया, लेकिन फिर हिन्दू समाज को 'शॉक ट्रिटमेंट' देने के लिए उन्होंने बौद्ध-धर्म को चुना। शायद इसका एक कारण हिन्दू-धर्म के मूल्यों की बौद्ध-धर्म से निकटता भी है।

डॉ. अंबेडकर ने मानवाधिकार के लिए लड़ाई लड़ी और पीडितों व शोषित वर्ग का संरक्षण किया। उन्हें गहराई से समझें तो वे आत्म गौरव के लिए चैतन्य मूर्ति हैं। वह भारत के पहले श्रम-मंत्री और पहले कानून-मंत्री बने। एक विद्वान होने के साथ-साथ वे अच्छे अर्थशास्त्री भी थे। २९ अगस्त १९४७ को, अंबेडकर को स्वतंत्र भारत के नए संविधान की रचना के लिए बनी संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। वह एक बुद्धिमान संविधान विशेषज्ञ

मनुष्य के जीवन की हर चुनौती-वह चाहे सामाजिक, सांस्कृतिक या फिर आर्थिक क्षेत्र हो-का सामने करने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। सीखने का जज्बा हो तो कोई भी बाधा पार की जा सकती है-वह चाहे जाति व्यवस्था की बेड़ियाँ हों, असपृश्यता हो या फिर गरीबी की बाधा। इसका सबसे अच्छा उदाहरण डॉ. बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर का जीवन है। भारत सहित पूरी दुनिया में १४ अप्रैल को उनकी जयंती मनाई जाती है।

थे, जिन्होंने लगभग ६० देशों के संविधानों का अध्ययन किया था और भारत के संदर्भ में इनुकूल विशेषताओं को ग्रहण किया। उनहें 'संविधान निर्माता' के रूप में मान्यता प्राप्त है।

अंबेडकर द्वारा तैयार किए गए संविधान के पाठ में व्यक्तिगत नागरिकों के लिए नागरिक स्वतंत्रता की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए संवैधानिक गारंटी और सुरक्षा प्रदान की गई है, जिसमें धर्म की आज़ादी, छुआछूत को खत्म करना और भेदभाव के सभी रूपों का उल्लेखन करना शामिल है। अंबेडकर ने महिलाओं के लिए व्यापक आर्थिक और समाजिक अधिकारों के लिए तर्क दिया, अनुसूचित जातियों और अनुसुचित जनजातियों तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के सदस्यों के लिए नागरिक सेवाओं, स्कूलों और कॉलेजों में नौकरियों के आरक्षण की व्यवस्था शुरू करने के लिए असेंबली का समर्थन जीता, जो कि सकारात्मक कार्रवाई थी। ज्यादातर लोग नहीं जानते कि डॉ. अंबेडकर ने संविधान के अनुच्छेद ३७० (जो जम्मू और कश्मीर को विशेष दर्जा देता था) को इस आधार पर तैयार करने से इन्कार कर दिया था कि यह भेदभावपूर्ण और राषट्र की एकता व अखंडता के सिद्धांतों के खिलाफ था। धारा ३७० को आखिरकार जम्मू-कश्मीर के महाराजा हरि सिंह के पूर्व दीवान गोपालस्वामी अय्यंगार ने तैयार किया था।

डॉ. अंबेडकर की समानता और हर इंसान की गरिमा के प्रति प्रतिबद्धता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब भारतीय संसद में हिन्दू कोड बिल को गिराया गया, तो उन्होंने भारत के पहले क़ानून-मंत्री के रूप में इस्तीफा दे दिया। डॉ. अंबेडकर ने हिन्दू महिलाओं की सामाजिक प्रतिष्ठा को उनके उचित अधिकार देकर और सामाजिक विषमताओं तथा जातिगत विषमताओं को समाप्त करने के लिए विधेयक प्रस्तुत किया था।

बिल की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार थीं- महिलाएँ अब पारिवारिक संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। यह कोड विवाह अस्थिर होने की स्थिति में दोनों, पुरुषों और महिलाओं को तलाक का अधिकार देता था। इसमें विधवाओं और तलाकशुदा को पुवर्विवाह का अधिकार दिया गया, बहुविवाद को गैरक़ानीनी घोषित कर दिया गया तथा अंतरजातीय विवाह व किसी भी जाति के बच्चों को गोद लेने की अनुमति प्रदान की गई।

-शेष पृ. १७ पर

आर्य समाज

-लाला लाजपतराय

१९०७ ई. में सर्वप्रथम आर्य समाज वे भारत के बाहर के लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया । उस समय से अब तक शायद ही कोई पुस्तक अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित हुई हो जिसमें भारत के आंदोलनों तथा भारतीय जीवन की समस्याओं का उल्लेख तो हुआ हो, किन्तु जिसमें आर्य समाज की चर्चा न हुई हो । इंग्लैण्ड के उदार दलीय तथा मजदूर नेताओं ने इस संस्था की चर्चा प्रशंसा एवं सहानुभूति के सम्मिलित भावों से की है, जब कि कुछ अनुदार दलीय साम्राज्यवादियों ने इसे ब्रिटिश विरोधी बताया है । ईसाई प्रचारकों ने भी आर्य समाज का उल्लेख या तो स्वस्थ आलोचक के रूप में किया है अथवा घृणा एवं द्वेष के भाव से किया है । १९०७ से पूर्व अंग्रेजी भाषा में आर्य समाज के सिद्धान्तों का निरूपण करने वाली पुस्तकें अत्यन्त न्यून थीं । स्व. पं. गुरुदत्त की कुछ लघु पुस्तिकाओं तथा बाबा छज्जू सिंह के कुछ ग्रन्थों को छोड़कर शायद ही कोई ऐसी पुस्तक भी जो आर्य समाज का अध्ययन करने वाले गैर भारतीय विद्यार्थी को दी जा सके । (१) **कालान्तर में आर्य समाज का अंग्रेजी में उत्कृष्ट साहित्य प्रकाशित हुआ है । (अनु.)** आर्य समाज के संस्थापक ने अपने ग्रन्थ संस्कृत अथवा हिन्दी में ही लिखे थे । उनके अनुयायियों द्वारा जो साहित्य लिखा गया उसका अधिकांश संस्कृत, हिन्दी अथवा उर्दू में ही था । यह सत्य है कि १९०७ ई. से पूर्व सत्यार्थ प्रकाश के दो अंग्रेजी अनुवाद-एक मास्टर दुर्गाप्रसाद कृत तथा दूसरा पं. चिरंजीव भारद्वाज कृत थे, परन्तु दोनों में ही यथार्थता का अभाव था, अतः विदेशी विद्यार्थियों के लिए वे सर्वथा अनुपयुक्त थे । **(२) पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय ने सत्यार्थ प्रकाश का सुन्दर अंग्रेजी अनुवाद किया है । (अनु.)**

वस्तुतः भारतीय विचारों तथा भारतीय भावनाओं को किसी विदेशी भाषा का जामा पहनाना नितान्त कठिन कार्य है । इस कार्य में साधारण सफलता अर्जित करने के लिए भीदोनों भाषाओं का उच्च कोटि का ज्ञान अपेक्षित है । तथापि कभी-कभी भारतीय शब्दावली का अंग्रेजी में अनुवाद करना प्रायः असम्भव हो जाता है । उदाहरणार्थ संस्कृत के **'धर्म'** को ही लें । अंग्रेजी भाषा में कोई ऐसा शब्द नहीहै जो इसका ठीक-ठीक अर्थ एक बारतवासी को बता सके । इन परिस्थितियों में हिन्दी ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवाद की उपयोगिता संशयात्मक हो जाती है ।

इतना होने पर भी अंग्रेजी के आर्य समाज विषयक साहित्य की मांग निरन्तर बढ़ रही है तथा मुझसे बहुधा कहा गया है कि इस मांग को पूरा करने के लिए मुझे कुछ करना चाहिए । मेरे जिन कृपालु मित्रों ने ऐसा परामर्श दिया, वे सम्भवतः यह नहीं जानते थे कि इस कार्य को करनेकी मेरी क्षमता तो उन महानुभावों से भी कम है जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद किया है । आर्य समाज में अधिक योग्य व्यक्ति थे और हैं जो इस कार्य को पूर्ण तत्परता तथा संतोष के साथ कर सके । दुर्भाग्यवश ऐसे लोगों में से कुछ काल के द्वारा हमसे छीन लिए गए हैं, कुछ अन्य यद्यपि इस कार्य को करने में पूर्णतया सक्षम है किन्तु वे अन्य कार्यों में व्यस्त हैं तथा इस कार्य के साथ पूर्ण न्याय करने की स्थिति में नहीं हैं । कुछ अन्य ऐसे भी हैं जिनके पास इस साहित्यिक कार्य के लिए न तो समय है और न करने का इरादा । आर्य समाज का गुरुकुल विभाग इस प्रसंग में कुछ उल्लेखनीय कार्य करने का इच्छुक है परन्तु अभी तक कुछ भी उल्लेख योग्य परिणाम नहीं निकला है । तथ्य यह है कि आर्य समाजें अपने देशवासियों के लिए ही इतना कुछ करना चाहती हैं कि हमारी भाषा न जानने वाले विदेशियों के लिए उनके पास न तो समय है और न धन । वर्तमान में उनके हाथ वैसे भी व्यस्त हैं ।

अभी तक आर्य समाजें अपने देशवासियों में ही सुधार कार्य करने में संतुष्ट थीं । उन्हें बाह्य संसार का ध्यान अपनी ओर खींचने की कोई इच्छा भी नहीं थी । यदि विश्व मंच पर उन्हें लाया गया है, तो यह बहुत कुछ उनकी इच्छा के विपरीत ही हुआ है । परिस्थितियों ने ही उन्हें बाध्य किया है तथा वे विपत्तियों की पाठशाला में बैठ कर एवं अनेक कटु अनुभवों के बाद यह सीख सके है कि कभी-कभी शान्त वैठकर, बिना किसी दिखावे के कार्य करना भी गलतफहमी तथा भ्रम का कारण बन जाता है । आज के विश्व जनीन आन्दोलनों के युग में कोई भी संगठन, चाहे उसके उद्देश्य एव लक्ष्य कितने ही सीधे एवं सरल क्यों न हों, गलत रूप से पेश किए जाने अथवा अन्यथा समझा जाने का खतरा नहीं उठा सकता । आर्य समाज जैसी संस्था जो अपने उद्देश्यों और लक्ष्यों के विचार से कतई भीरू नहीं है, उसके लिए तो ऐसा करना और भी कठिन है । जब तक केवल भारत में ही आर्य समाज पर आक्रमण किए जाते रहे, उसके लिए यह सम्भव था कि वह इन हमलों की उपेक्षा करता । जिन लोगों के बीच तथा जिनके लिए आर्य समाज कार्य करता वे उसके महत्व को जानते थे तथा किसी भी सीमा तक की गई उसकी आलोचना तथा आज्ञानपूर्वक उसको अन्यथा रूप में प्रस्तुत किए जाने का प्रयत्न भी आर्य समाज की हानि करने में असमर्थ रहे । आर्य समाज ने विदेशियों की उपेक्षा की, न तो उन्हें अपने धर्म में लाने का प्रयत्न ही किया और न उनकी धारणाओं की ही चिन्ता की । वह सरकार अथवा उच्च कोटि की सुशिक्षित सभाओं द्वारा मान्यता प्राप्त करने के विचार के प्रति भी उदासीन ही रहा । परन्तु १९०७ ई. में जब आर्य समाज ने यह समझा कि उसके स्वावलम्बन तथा एकेले रहने की प्रवृत्ति का गलत अर्थ लगाया जा रहा है तथा जब उसे बिना अपना पक्ष प्रस्तुत किए ही निन्दा का पात्र बनाया गया तो उसने विरोध में अपनी आवाज उठाई तथा यूरोपियनों को अपनी संस्थाओं को देखने के लिए आमंत्रित किया । उनसे इस स्थानों पर ठहरने तथा वास्तविकता को स्वयं जानने के लिए अनुरोध किया । उस समय से, आर्य समाज को कुछ मौन रहकर

कार्य करने वाले लोग सरकार, विचारशील संसार तथा भारत एव इंग्लैण्ड के समाचार पत्रों के समक्ष अपना मामला पेश करने लगे हैं, यद्यपि ऐसा करने में उन्हें अपने रास्ते से थोड़ा हटना भी पड़ता है । अपनी सुरक्षा के लिए आर्य समाज के कुछ अति व्यस्त कार्यकर्त्ताओं को अंग्रेजी भाषा में इनके सिद्धान्तों, शिक्षाओं, उद्देश्यों तथा कार्य के सम्बन्ध में लिखना पड़ा है । अभी हाल में आर्य समाज के गुरुकुल के लक्ष्यों और उद्देश्यों को समझाते हुए अंग्रेजी के अनेक व्याक्यान तथा पुस्तिकाएं प्रकाशित की है । ऐसा ही कार्य उनके कुछ साथियों ने भी किया है जिनमें प्रो. रामदेव तथा प्रो. बालकृष्ण के नाम उल्लेखनीय हैं । अन्य जिन लोगों ने अंग्रेजी में इस विषय पर ग्रन्थ लिखे हैं उनमें राय ठाकुर दत्त तथा लाला रलाराम एवं डी.ए.वी. कॉलेज के प्रो. दीवानचन्द के नाम उल्लेखनीय है । तथापि एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता बड़ी तीव्रता से अनुभव की जा रही थी जिसमें आर्य समाज के आन्दोलन के इतिहास तथा उसकी प्रवृत्तियों का पूर्ण परिचय दिया जाता तथा जिसका भारत तथा विदेशों में भी उपयोग हो सकता । एक समय यह आशा की गई थी कि लाला द्वारकादास एम.ए. इस आवश्यकता की पूर्ति करेंगे क्योंकि उन्हें जितना अधिक पश्चिमी दर्शन का ज्ञान था, उतना ही हिन्दू चिन्तन से भी वे परिचित थे, परन्तु अक्टूबर, १९१२ ई. में उनकी मृत्यु हो जाने के कारण यह आशा अधूरी ही रही ।

वर्तमान ग्रन्थ उसी आवश्यकता की पूर्ति का एक प्रयत्न है, जिसकी चर्चा हम कर चुके हैं । ग्रन्थ की न्यूनताओं से ग्रन्थकार पूर्णतया परिचित है, क्योंकि न तो वह परिपूर्ण ज्ञान का ही दावा करता है और न शैली की श्रेष्ठता का ही । इस विषय पर उसके लेखन को महत्व दिया जाए, इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि यह १८ वर्ष की आयु से ही इस आन्दोलन से सम्बन्धित रहा है । उसने अपने अवकाश के सवश्रेष्ठ भाग को आर्य समाज हेतु अर्पित किया है, उसने आर्य समाज के प्रभाव से ही उत्पन्न हुई हैं । साथ ही यह भी कहना आवश्यक है कि ग्रन्थ लेखक से सम्बन्ध रखने के कारण ही आर्य समाज को एक गम्भीर राजनीतिक संकट में से गुजरना पड़ा है । अच्छा तो यह होता कि अधिक योग्य तथा उपयुक्त व्यक्ति इस कार्य में अपने समय तथा शक्ति को लगाता, किन्तु ऐसा न होने के कारण इन पंक्तियों के लेखक ने ही अपने आर्य समाज के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य भाव की दृष्टि से ग्रंथ लेखन का यह कार्य किया है।

हम ग्रन्थ के लिखने में लेखक का मौलिकता का दावा कतई नहीं है । यह तो एक संकलन जैसा कार्य ही है । यही कारण है कि पुस्तक में अनेक लम्बे उद्धरण आ गए हैं । पुस्तक का उद्देश्य तो आर्य समाज के नेताओं के शब्दों में हीइस संस्था की स्थिति का बयान करता है, क्योंकि वे ही इसके सिद्धान्तों तथा विचारधारा के सर्वश्रेष्ठ प्रवक्ता एवं व्याख्याकार हैं ।

स्वामी दयानन्द की जीवनी से सम्बन्धित अध्याय बाबा छज्जू सिंह की पुस्तक The Life and Teachings of Swami Dayanand पर आधारित हैं जिन्होंने आर्य समाज के अंग्रेजी मुख पत्र (आर्य पत्रिका लाहौर) का १५ या उससे अधिक वर्षों की अवधि तक सम्पादन किया था । इस पुस्तक को लिखने में अन्य सूत्रों के साथ-साथ बाबा छज्जू सिंह ने १८९५ ई. में हिन्दुस्तानी भाषा **(यह जीवनी लालाजी द्वारा उर्दू में लिखी गई थी । (अनु.)** में लिखी गई इस लेखक की स्वामी दयानन्द की जीवनी से भी सहायता ली थी । आर्य समाज की शिक्षाओं तथा सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उक्त पुस्तक के अतिरिक्त निम्न पुस्तकों से भी सहायता ली गई है-१) A Hand Book of the Arya Samaj, संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाके ट्रैक्ट विभाग द्वारा प्रकाशित, २) Teachings of the Arya Samaj, बाबा छज्जू सिंह कृत, ३) आर्य समाज के दोनों विभागों के नेता लाला हंसराज तथा लाला मुन्शीराम के प्रकाशित व्याख्यान । प्रायः जिन ग्रन्थों के उद्धरण दिए गए है उनका उल्लेख पाद टिप्पणियों में कर दिया गया है । सौभाग्यवश, स्वामी दयानन्द और बनारस के पण्डितों के बीच नवम्बर १८६९ ई. में हुए काशी शास्त्रार्थ का वह विवरण जो The Christian Intelligence में १८७० ई. में छपा था उसे मूल रूप में यहां उद्धृत किया गया है । बाबा छज्जू सिंह द्वारा यह विवरण १९९८ ई. में प्रकाशित मेरी पुस्तक से लेकर पुनः अंग्रेजी में अनुदित किया गया है । इस मूल्यवान उद्धरण के लिए में चर्च मिशनरी सोसाइटी लंदन के पुस्तकालयाध्यक्ष भी पोर्टर का कृतज्ञ हूं जिन्होंने मुझे वह पुस्तक प्रदान की जिनमें यह लेख छपा था ।

आर्य समाज द्वारा नियंत्रित और संचालित विभिन्न संस्थाओं का विवरण देने में मैंने उन उन संस्थाओं के व्यवस्थापकों द्वारा प्रकाशित अधिकृत रिपोर्टो का उपयोग किया है, उदारणार्थ गुरुकुल कांगड़ी का विवरण इस संस्था की रिपोर्ट पर आधारित है । आर्य समाज के दो विद्यालयों-दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज, लाहौर तथा गुरुकुल कांगड़ी को लेकर मेरी स्थिति विचित्र सी है । प्रथम संस्था से में मैं एक पिता के तुल्य प्रेम करता हूँ और दूसरी संस्था से मेरा प्रेम प्रेमी का सा है । तथापि इन दोनों प्रकार की शिक्षा प्रणालियों से मेरी पूर्ण सहमति नहीं है, मेरा दोनों संस्थाओं से मतभेद भी है । अतः मैने यही उचित समझा कि दोनों संस्थाओं का विवरण उनके संस्थापकों के ही शब्दों में दे दिया जाए । परिणामतः मुझे लम्बे-लम्बे उद्धरण देने पड़े, यद्यपि सम्भव यह भी था कि इनका सार-संक्षेप स्वल्प स्थान में दे दिया जाता । आर्य समाज की राजनीति का विवरण देने तथा उनके आलोचकों की स्थिति को प्रस्तुत करने में मैंने पर्याप्त सावधानी बरती है तथा ऐसा करते समय प्रायः मूल उद्धरण ही दिए गए हैं । इन अपवादों के अतिरिक्त पुस्तक में अभिव्यक्त मत का सम्पूर्ण दायित्व मुझ पर ही है ।

यदि इस तथ्य की ओर ध्यान दिया जाए कि आर्य समाज के निर्माण में मैंने भी अपनी स्वल्प भूमिका निभाई है तो मुझे यह कहने के लिए क्षमा करें कि मैं इस पुस्तक के अध्ययन की संस्तुति उन लोगों से करूंगा जो संक्षेप में आर्य समाज तथा उसके संस्थापक से परिचित होना तथा उसकी विगतकालीन प्रवृत्तियों का विहगावलोकन करना चाहते हैं । इस पुस्तक का प्रचार भारत में तथा उसके बाहर भी होना अभीष्ट है, क्योंकि इसी तथ्य को दृष्टि में रख कर पुस्तक की अधिकांश सामग्री लिखी गई है । कुछ बातें तो अत्यन्त विस्तार के साथ केवल गैर भारतीयों के लिए ही प्रस्तुत की गई है जिन्हें कि मात्र भारतवासियों के उपयोग हेतु लिखी जाने वाली पुस्तक से सहज ही हटाया जा सकता था । इसी प्रकार अनेक बातें मात्र भारतीयों की जानकारी के लिए हीहै, जिनका अन्यों के लिए विशेष उपयोग नहीं है । पुस्तक की रचना के सम्बन्ध में एक अन्य बात भी यहां कहना चाहतू हूँ । इस पुस्तक को मानसिक तैयारी रूपरेखा का निर्माण तथा लेखनकार्य लगभग आठ सप्ताह में लंदन

-शेष पृ. १७ पर

इतिहास के झरोखे से आर्य समाज

-डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार

आर्यसमाज कोई नया सम्प्रदाय, मत या पन्थ नहीं है। वह एक ऐसा संगठन या समुदाय है, जिसके सुनिश्चित उद्देश्य और सुनिर्धारित नियम हैं। 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है' (आर्यसमाज का छठा नियम)। बम्बई में निर्धारित नियमों में इसी उद्देश्य को अन्य ढंग से प्रकट किया गया था—"सब मनुष्यों के हितार्थ आर्यसमाज का होना आवश्यक है।" आर्यसमाज की स्थापना का स्पष्ट उद्देश्य यह था कि सम्पूर्ण संसार का उपकार किया जाए या मनुष्यमात्र का हित-कल्याण सम्पादित किया जाए। संसार के उपकार व मनुष्यों के हित-कल्याण का साधन यह है कि सबकी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति की जाए। प्रत्येक मनुष्य को जहाँ अपनी शारीरिक और आत्मिक उन्नति करनी चाहिए, वहाँ साथ ही सबकी सामाजिक या सामूहिक उन्नति के लिए भी प्रयत्न किया जाना चाहिए। आर्यसमाज के नौवें नियम में इसी बात को अधिक स्पष्ट रूप से इस प्रकार कहा गया है—"प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।" मनुष्यों के वैयक्तिक एवं सामूहिक हित-कल्याण का यह महत्त्वपूर्ण कार्य ऐसे ही लोगों द्वारा सम्पादित किया जा सकता है जो 'सत्य विद्यादि गुणयुक्त, उत्तम गुण कर्म स्वभाव वाले, धर्मात्मा और परोपकारी' हों। ऐसे लोगों को ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य माना है और उन्हीं के संगठन को 'आर्यसमाज' की संज्ञा दी है। महर्षि को यही अभीष्ट था कि 'सत्पुरुष, सदाचारी और परोपकारी व्यक्ति' आर्यसमाज के सभासद् बनें (बम्बई में निर्धारित आठवाँ नियम) और वे मनुष्यमात्र के हित-कल्याण के सम्पादन के लिए प्रयत्न करें।

महर्षि का मन्तव्य था कि आर्य किसी विशेष जाति का नाम नहीं है, और न ही किसी देश विशेष के निवासियों की संज्ञा आर्य है। हिमालय से रामेश्वरम् तक विस्तीर्ण जो यह भारत भूमि है, उसके निवासी प्राचीन समय में 'आर्य' कहाते थे, क्योंकि वे श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव वाले थे और उन्हीं के कारण इस देश को 'आर्यावर्त' कहा जाता था। आर्य लोग वेदोक्त धर्म का पालन करते थे, और उनकी सभ्यता एवं संस्कृति बहुत उन्नत व उत्कृष्ट थीं। अन्य देशों के निवासी इस आर्यावर्त से ही धर्म और संस्कृति की शिक्षा ग्रहण किया करते थे। उस प्राचीन समय में आर्यावर्त के आर्य सम्पूर्ण संसार का नेतृत्व करते थे, सर्वत्र वैदिक धर्म का प्रचार था और अन्य देशों के राजा व शासक आर्यावर्त के चक्रवर्ती सम्राटों के आधिपत्य को स्वेच्छापूर्वक स्वीकार करते थे। महाभारत युद्ध के पश्चात् आर्यावर्त का पतन प्रारम्भ हो गया। आलस्य, प्रमाद, विषयासक्ति आदि दुर्गुणों के प्रादुर्भाव के कारण आर्यों की शक्ति का ह्रास होने लगा, और सनातन वैदिक धर्म की सत्य शिक्षाओं को भुलाकर वे ऐसे मत-मतान्तरों के जाल में फँसने लग गए, जो या तो वेद-विरोधी थे और या वैदिक धर्म के विकृत रूपों का अनुसरण करते थे। इसी का यह

परिणाम हुआ कि आर्यावर्त की सभ्यता, संस्कृति और राजशक्ति में क्षीणता आने लगी, इस देश पर विदेशी व विधर्मी लोगों के आक्रमण भी प्रारम्भ हो गए, और आर्यावर्त के लिए अपनी स्वतन्त्रता तक को कायम रख सकना सम्भव नहीं रहा। मनुष्यमात्र के हित-कल्याण के जिस महान् उद्देश्य को सम्मुख रखकर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की थी, उसकी पूर्ति के लिए वे यह आवश्यक समझते थे कि पहले आर्यावर्त देश की दशा को उन्नत किया जाए। वे आर्यावर्त को संसार का सर्वश्रेष्ठ देश मानते थे, और उन्हें विश्वास था कि प्राचीन समय के समान भविष्य में भी इस देश के लोगों द्वारा सम्पूर्ण संसार का नेतृत्व किया जा सकता है। आर्यावर्त के बहुसंख्यक निवासी वर्तमान समय में भी वेदों को प्रमाण रूप से स्वीकार करते हैं, चाहे वे उनकी वास्तविक शिक्षाओं को भूल ही क्यों न गए हों। महर्षि का प्रयत्न था, कि भारत में प्रचलित आर्य या हिन्दू सम्प्रदायों में जिन वेदविरुद्ध मन्तव्यों का समावेश हो गया है उनका निराकरण कर सत्य सनातन वैदिक धर्म के विशुद्ध स्वरूप को पुनःस्थापित किया जाए, भारतवासियों को सच्चे अर्थ में 'आर्य' बनाया जाए, और फिर उनके नेतृत्व में सम्पूर्ण मानव-समाज का हित-कल्याण सम्पादित किया जाए। अपने इसी महान् कार्य को जारी रखने के लिए उन्होंने आर्यसमाज को स्थापित किया था।

इसमें सन्देह नहीं, कि महर्षि को अपने उद्देश्य की पूर्ति में पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत में जो जागृति हुई, धर्म तथा समाज में जो सुधार हुए और चिरनिद्रा से जागकर भारत जो उन्नति के पथ पर अग्रसर होने को प्रवृत्त हुआ, उसका प्रधान श्रेय महर्षि तथा आर्यसमाज को ही दिया जाना चाहिए। पर अभी आर्यसमाज को बहुत कार्य करना है। कुरीतियों के निवारण, पाखण्ड के खण्डन तथा अन्धविश्वासों के निराकरण में आर्यसमाज ने अवश्य ही बहुत उपयोगी कार्य किया है। पर अभी न्याय पर आधारित वैसा समाज-संगठन कायम नहीं किया जा सका है, जिसका प्रतिपादन महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा किया गया था। न्याय पर आधारित समाज में ऊँच-नीच, छूत-अछूत आदि के कोई भेद नहीं होंगे, सबको अपनी वैयक्तिक (शारीरिक तथा आत्मिक) उन्नति करने का समान अवसर मिलेगा और सब कोई अपनी योग्यता व क्षमता के अनुसार कार्य, पद एवं सामाजिक स्थिति प्राप्त कर सकेंगे। ऐसे समाज की स्थापना की समस्या आज सम्पूर्ण संसार के सम्मुख विद्यमान है, और महर्षि द्वारा प्रतिपादित व्यवस्था द्वारा उसका समुचित समाधान किया जा सकता है। आर्य-समाज को यह महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पादित कर सम्पूर्ण मानवसमाज का हित-कल्याण करना है।

आर्यसमाज के इतिहास का जो यह पहला भाग पाठकों के हाथों में है, उसमें उस पृष्ठभूमि का विशद रूप से निरूपण किया गया है जिसमें कि आर्यसमाज की स्थापना की गयी थी। वैदिक धर्म को जो सत्य, सनातन कहा जाता है, वह निरर्थक नहीं है। प्राचीन संसार की बहुत-सी सभ्यताएँ अब नष्ट हो चुकी हैं। मिस्र, असीरिया, बैबिलोनिया आदि के अब नाम ही शेष बचे हैं। मिस्र के वर्तमान निवासियों का धर्म तथा संस्कृति की दृष्टि से उन प्राचीन लोगों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है, जिन्होंने नील नदी की घाटी में गगनचुम्बी विशाल पिरामिडों का निर्माण किया था, और जिन्होंने अपने पितरों की 'ममी' बनाकर उन्हें अमर जीवन प्रदान करने का प्रयत्न किया था। यही बात असीरिया,

చరిత్రపై చెరగని సంతకం

అతను విద్యార్థి అయితే, నేల మీద గోనెసంచి పరుచుకోవాల్సి వచ్చింది. బడిలో బెంచ్ మీద కూర్చోనివ్వలేదు. నల్లబల్లని తాకనివ్వలేదు. ట్యూషన్లు చెప్పుకుని బతికాడు. స్టాక్స్, షేర్ల వ్యాపారులు లాభసాటి సలహాలు తీసుకున్నవారే. అతని సాంఘిక నేపథ్యం తెలియగానే సలహాలకు రావడం మానేశారు! న్యాయవాదిగా ప్రాక్టీస్ చేశాడు. అతను మాస్టార్లై అధ్యాపక ఉపన్యాసాలు చేస్తే, ఆసక్తిగా విన్న విద్యార్థులూ, సహోద్యోగులే అంటుముట్టు పాటించి అవహేళనలు చేశారు. అతను మహద్ చెరువులో తాగునీటికోసం ఉద్యమిస్తే, వెయ్యి బిందెల నీళ్లతో చెరువును శుద్ధి చేసుకున్నారు! అతను ఆలయ ప్రవేశ అంశం అధికారులతో చర్చించబోతే, ఆలయాన్ని శుద్ధి చేసుకున్నారు! అతను అధికారిగా విధులు నిర్వహించబోతే, బంట్రోతులు ఫైళ్ళు చేతికి అందించకుండా బల్లమీదే విసిరేసి అవమానించారు. అతను సత్రంలో దిగితే సత్రం యజమాని బయటకు గెంటేశాడు. స్నానాహారాలూ లేక చెట్టు కింద కూర్చొని రాత్రంతా ఏడ్చాడు! అతను భవిష్యత్ భారత రాజ్యాంగ నిర్మాత! అతను దేశం మెచ్చిన భవిష్యత్ భారతరత్న! వర్ణ, కుల వివక్షల నిర్మూలనా విప్లవ నేత! అణగారిన వర్గాల రాజకీయ విముక్తికి మార్గదాత! సామాజిక సమానత్వ ఉద్యమ నేత! ప్రజలు ప్రేమగా పిలుచుకునే బాబాసాహెబ్! ఆయనే డాక్టర్ బి.ఆర్. అంబేద్కర్!

భారతదేశ రాజకీయాల్లో డాక్టర్ బి.ఆర్. అంబేద్కర్ పాత్ర మహోన్నతమైనది. ఆయన ప్రపంచ స్థాయి ఆర్థిక శాస్త్రవేత్త, విద్యావేత్త, సామాజిక శాస్త్రవేత్త, గొప్ప పరిశోధకుడు, అంతర్జాతీయ న్యాయకోవిదుడు, బహుభాషా నిపుణుడు, బహు గ్రంథకర్త. భారతీయ సమాజంలో లోతుగా వేళ్లూనుకొని ఉన్న సామాజిక వివక్షల నిర్మూలన కోసం జీవితాంతం పోరాడిన యోధుడు. సామాన్యుడిగా ప్రారంభమైన అంబేద్కర్ జీవితం, అణగారిన సామాజిక వర్గాల ప్రపంచ నాయకుని స్థాయికి చేరుకుంది.

1920లోనే డాక్టర్ అంబేద్కర్ బొంబాయి శాసన మండలి సభ్యునిగా నామినేట్ అయి, మూడేళ్ళ ఆ పదవిలో కొనసాగారు. బహుజనుల హక్కుల కోసం అంబేద్కర్ పలు సంస్థలను స్థాపించారు.
1924 జూలై 20న బహిష్కృత హితకారిణి సభ,
1927 సెప్టెంబర్ 4న సమతా సమాజ సంఘ,
1936 ఆగస్టు 6న ఇండిపెండెంట్ లేబర్‌పార్టీ,
1942 జూలై 19న షెడ్యూల్డు క్యాస్ట్ ఫెడరేషన్ లను స్థాపించారు. 1937 ఫిబ్రవరి 17న జరిగిన బొంబాయి రాష్ట్రం ఎన్నికల్లో ఇండిపెండెంట్ లేబర్ పార్టీ అనుకున్న వాటికన్నా ఎక్కువ స్థానాలను గెలుచుకుంది. పదిహేను స్థానాల బలంతో రాష్ట్ర అసెంబ్లీలో అంబేద్కర్ ప్రతిపక్షనేతగా ఎన్నికయ్యారు. వెట్టి చాకిరీ రద్దు, హరిజన పదం రద్దు, కార్మికులు, వ్యవసాయ కూలీలు, రైతులు, అణగారిన సామాజికవర్గాల వారి హక్కుల కోసం అసెంబ్లీ లోపలా, వెలుపలా డాక్టర్ అంబేద్కర్ నిరంతరం ఉద్యమిస్తూ వచ్చారు.

1935లో రిజర్వుబ్యాంక్ ఆఫ్ ఇండియా వ్యవస్థాపనలో డాక్టర్ అంబేద్కర్ కీలక పాత్ర నిర్వహించారు. భారతీయ ఆర్థిక వ్యవస్థ, ద్రవ్యనోట్ల సమస్యలపై అధ్యయనం చెయ్యడానికి బ్రిటిష్ ప్రభుత్వం నియమించిన రాయల్ కమిషన్‌గా ప్రసిద్ధి చెందిన హిల్టన్ యంగ్ కమిషన్‌కు సమర్పించిన విజ్ఞప్తుల్లోని మార్గదర్శకాలే తదుపరి కాలంలో రిజర్వు బ్యాంకు స్థాపన

> భారతదేశ సాంఘిక సంస్కరణల కార్యరంగంలో, రాజకీయాల్లో, ప్రభుత్వాధికార వ్యవస్థల్లో ఎన్నో కొత్త చట్టాలనూ, ప్రజాస్వామిక విలువలనూ, నూతన భావాలనూ ప్రవేశపెట్టిన మహోన్నత ప్రజాస్వామిక వాది డాక్టర్ అంబేద్కర్.

దాని దార్శనిక దృక్పథంగా మారింది. దీనికంతటికీ ఆధారం 1922లో డాక్టర్ అంబేద్కర్ యూనివర్సిటీ ఆఫ్ లండన్‌లో డాక్టరేట్ పట్టా కోసం రాసిన పరిశోధనా గ్రంథం 'రూపాయి సమస్య - పుట్టుక, పరిష్కారం' అని చెప్పుకోవాలి. నిజానికి ఈ సేవలుగాను భారతీయ కరెన్సీ నోట్లపై డాక్టర్ అంబేద్కర్ బొమ్మ ముద్రించి ఉండినట్లయితే, భారత ప్రభుత్వ వ్యవస్థ మహనీయుడు డాక్టర్ అంబేద్కర్‌కు కొంతైనా గౌరవాన్ని అందించి తనని తాను గౌరవించుకొని ఉండేది.

డాక్టర్ అంబేద్కర్ వైస్రాయి ఎగ్జిక్యూటివ్ కౌన్సిల్ మెంబర్‌గా రెండు పదవుల్లో పని చేశారు. ఒకటి-వైస్రాయి లేబర్ కౌన్సిల్ సభ్యునిగా, రెండు, సెంట్రల్ పబ్లిక్ వర్క్స్ డిపార్ట్‌మెంట్ మెంబర్‌గా 1942 నుంచి 1946 దాకా పని చేశారు. ఈ కాలంలో భారతదేశంలో అనేక కార్మిక సంస్కరణలకు డాక్టర్ అంబేద్కర్ పూనుకున్నారు. ఢిల్లీలో 1942 నవంబర్‌లో జరిగిన ఇండియన్ లేబర్ కాన్ఫరెన్స్ ఏడవ సెషన్‌లో భారతదేశంలో 12 గంటల పనిదినాన్ని ఎనిమిది గంటల పనిదినంగా డాక్టర్ అంబేద్కర్ మార్చారు. అంతేగాదు, కార్మికుల సంక్షేమం కోసం కరువు భత్యం, సెలవు లాభం, ఉద్యోగ బీమా, సమాన పనికి సమాన వేతనం, కనీస వేతనాలు, ఇంకా నిర్దిష్ట కాల వ్యవధిలో వేతనాల సవరణ మొదలగు జీవన సదుపాయాలు, భద్రతలు, ప్రమాణాలను భారతదేశ కార్మికవర్గం, ఉద్యోగవర్గాల కోసం డాక్టర్ అంబేద్కర్ ప్రవేశపెట్టారు. ఇంకా దేశమంతటా ఎంప్లాయిమెంట్ ఎక్స్చేంజిలను స్థాపించడానికి, కార్మిక సంఘాలను పటిష్ఠం చెయ్యడానికి, డాక్టర్ అంబేద్కర్ చేసిన కృషి అపూర్వమైనది. ఈ నేపథ్యంగానూ, భారతదేశ కార్మిక, ఉద్యోగ వర్గాలు అంబేద్కర్ నుంచి నిత్యస్ఫూర్తిని పొందవలసిన అవసరం ఉంది. నవతర కమ్యూనిస్టు పార్టీలుగానీ, వాటి అనుబంధ ట్రేడ్ యూనియన్లుగానీ కార్మికుల హక్కుల కోసం ఎనలేని సేవలు చేసిన డాక్టర్ అంబేద్కర్‌ని విస్మరించడం గర్హనీయం.

స్వతంత్ర భారతదేశంలో బహుళార్థ సాధక నదీ లోయ ప్రాజెక్టులకు అంబేద్కర్ మార్గదర్శకత్వం వహించారు. దామోదర్ వ్యాలీ ప్రాజెక్టు, సోన్ నదీ లోయ ప్రాజెక్టు, భాక్రానంగల్ డ్యాం ప్రాజెక్టు, హీరాకుడ్ డ్యాం ప్రాజెక్టు మొదలైనవి. అలాగే కేంద్ర, రాష్ట్రాల్లో నీటిపారుదల అభివృద్ధి కోసం కేంద్ర జలసంఘాన్ని స్థాపించారు. శక్తిమంతమైన జల, థర్మల్ విద్యుత్ కేంద్రాలను స్థాపించి, భారత విద్యుత్ రంగంలో సెంట్రల్ టెక్నికల్ పవర్‌బోర్డును, కేంద్ర విద్యుత్ ప్రాధికార సంస్థను స్థాపించడం వెనక డాక్టర్ అంబేద్కర్ కృషి ఎంతో అమూల్యమైనది. సుశిక్షిత విద్యుత్ ఇంజనీర్ల అవసరాన్ని, పవర్‌గ్రిడ్ వ్యవస్థల అవసరాన్ని డాక్టర్ అంబేద్కర్ ఆనాడే ఐద్ఘాటించారు. ఇండియాలోని రైతు సంఘాలుగానీ, పారిశ్రామిక యాజమాన్యాలు గానీ అంబేద్కర్‌ని తలుచుకున్నట్లు ఎక్కడా కనిపించదు, వినిపించదు మనకు. ఇదొక పెద్ద విషాదం.

భారతీయ మహిళా లోకానికి కొన్ని ముఖ్యమైన హక్కులను కల్పించిన హిందూకోడ్ బిల్లు పార్లమెంటులో పాస్‌కావడానికి డాక్టర్ అంబేద్కర్ ఏళ్ళ తరబడి సవర్ణ పితృస్వామ్య రాజకీయాలతో పోరాడారు. ఈ బిల్లు ముఖ్యంగా రెండు ప్రయోజనాలను ఉద్దేశించింది. ఒకటి హిందూ మహిళలు కోల్పోయిన హక్కులను పునరుద్ధరించి వారికి సాంఘిక హోదా కల్పించడం. రెండు సాంఘిక వ్యత్యాసాలను, కుల అసమానతలను అధికారికంగా రద్దు చెయ్యడం. ఈ బిల్లులోని కొన్ని ముఖ్యాంశాలు: కుటుంబ ఆస్తులకు మహిళలు వారసత్వ హక్కుదారులవుతారు. వితంతువులకు, విడాకులు పొందిన వారికి పునర్వివాహ హక్కు వస్తుంది. తిరస్కరించడానికి వీలులేని విధంగా, పురుషులతో సమానంగా ఈ బిల్లు మహిళలకు విడాకుల హక్కు కల్పిస్తుంది. ఆడపిల్లలు దత్తతకు అనుమతించబడతారు. బహుభార్యాత్వం చట్టవిరుద్ధమవుతుంది. కులాంతర వివాహాలు, ఏ కులం పిల్లలనైనా దత్తత తీసుకోవడం అనుమతించబడతాయి. నాటి ప్రధానమంత్రి నెహ్రూ, కేంద్రంలో అధికారంలో ఉన్న అప్పటి కాంగ్రెస్ పార్టీ నాయకత్వం మద్దతు ఇవ్వకపోవడంతో పార్లమెంటులో హిందూ కోడ్ బిల్లు వీగిపోయింది. దీంతో మహిళా హక్కులకు పెద్దదిక్కైన డాక్టర్ అంబేద్కర్ కేంద్ర న్యాయశాఖ మంత్రి పదవికి 1951 సెప్టెంబర్ 27న రాజీనామా చేశారు. ఈ సందర్భంగా డాక్టర్ అంబేద్కర్ మాట్లాడుతూ మహిళలు ఎంతగా అభివృద్ధి సాధించారు అన్న స్థాయిని బట్టే ఆ కమ్యూనిటీ అభివృద్ధిని నేను లెక్కిస్తాను అని అన్నారు. రాగా మహిళల హక్కుల కోసం నిబద్ధతతో పోరాడి కేంద్ర న్యాయశాఖామంత్రి పదవిని త్యజించిన డాక్టర్ అంబేద్కర్‌ని అధికపక్షాల రాజకీయ పార్టీల మహిళా సంఘాలు, స్త్రీవాదులు, ఎన్జీవోలు ఏనాడూ డాక్టర్ అంబేద్కర్ సేవలను స్మరించుకోకపోవడం చాలా దుఃఖదాయకం.

1956 డిసెంబర్ ఆరున, అరవై ఐదవ ఏట డాక్టర్ బాబాసాహెబ్ అంబేద్కర్ మహాపరినిర్వాణం చెందారు. ఆయన బతికున్నంతకాలం కాంగ్రెస్ పార్టీ నాయకత్వం తృణీకారంతోనే చూసింది. కాగా, 1990 మార్చి 31న వి.పి.సింగ్ ప్రధానమంత్రిగా ఉన్న కాలంలో అంబేద్కర్ మహాపరినిర్వాణం అనంతరం 34 ఏళ్లకు ఆయనకు భారతరత్న పురస్కారం ఇచ్చి గౌరవించింది. భారతదేశ సాంఘిక సంస్కరణల కార్యరంగంలో, రాజకీయాల్లో, ప్రభుత్వాధికార వ్యవస్థల్లో ఎన్నో కొత్త చట్టాలనూ, ప్రజాస్వామిక విలువలనూ, నూతన భావాలనూ డాక్టర్ అంబేద్కర్ ప్రవేశపెట్టారు. దేశ చరిత్రపై చెరగని సంతకంగా నిలిచారు.

◆ కృపాకర్ పొనుగోటి

(నేడు అంబేద్కర్ 130వ జయంతి)

Date : 18-04-2021

సామాజిక సేవలో ఆర్య సమాజ్

● రేపు ఆర్య సమాజ్ వ్యవస్థాపక దినోత్సవం
● ఏర్పాట్లు పూర్తి

బన్సీలాల్‌పేట్: భారతీయుల్లో తమ దేశం పట్ల, ఆర్య ధర్మం పట్ల, ఆర్య గ్రంథాల పట్ల భక్తి విశ్వాసాలు కలిస్తూ జాతిలో ఆత్మ విశ్వాసం పునరు జ్జీవింపజేసిన మహాపురుషుడు దయానంద సరస్వతి. నాటి గొప్ప చారిత్రక అవసరాన్ని గుర్తించిన స్వామి దయానంద సరస్వతి ఆర్య సమాజాన్ని 1875లో స్థాపించారు. సకల సత్యాలకు, అత్యున్నత ఆధ్యాత్మిక విజ్ఞానానికి వేదాలే మూలస్తంభాలని, వేదాల పునాదులపై హైందవ పునః స్థాపన జరగాలని అభిలషించిన వైదికధర్మ ప్రచారకుడు దయానందుడు. వేద ధర్మ ప్రచారానికి ఆర్యసమాజం స్థాపించారు. ఈ నెల 13న ఆర్య సమాజ్ వ్యవస్థాపక దినోత్సవాన్ని ఘనంగా నిర్వహించడానికి ఆర్య సమాజ్ సంస్థలు విస్తృతమైన ఏర్పాట్లు చేస్తున్నాయి. ఆర్య సమాజ్ సామాజిక సేవా కార్యక్రమాలతో పాటు సమాజపురోభివృద్ధికి తమవంతు పాత్ర నిర్వహిస్తున్నారు. ఆర్య సమాజం ప్రతి ఏడు ఉగాది రోజు వార్షికోత్సవం జరుపుకుంటారు. ఇందుకు సికింద్రాబాద్ ఆర్పీ రోడ్డులోని ఆర్య సమాజ్ విస్తృతమైన ఏర్పాట్లు చేస్తున్నారు. హైదరాబాద్ విమోచన కోసం, నాటి నిజాం హయాంలో ఆర్య సమాజ్ ప్రతినిధులు వీరోచితంగా పోరాడారు. అనేక ఉద్యమాలు, ఆందోళనలో ఆర్య సమాజ్ ప్రతినిధులు క్రియాశీలకమైన పాత్ర నిర్వహించారు. నాడు నిజాంపై బాంబు వేసిన నారాయణరావు పవార్ కూడా ఆర్య సమాజ్ ప్రతినిధే.

సికింద్రాబాద్ ఆర్పీ రోడ్డులోని ఆర్య సమాజ్..

◆ సికింద్రాబాద్ ఆర్పీ రోడ్డులోని ఆర్య సమాజానికి ఎంతో చరిత్ర ఉంది. 1901లో దీన్ని స్థాపించి అప్పటి నుంచి నేటి వరకు అనేక సామాజిక సేవా కార్యక్రమాలను నిర్వహిస్తున్నారు.

ఆర్పీ రోడ్డులోని ఆర్య సమాజ్ భవనం

◆ ఈ ఆర్య సమాజ్ ఏర్పాటుతో పాటు విస్తరణ కార్యకలాపాల కోసం లాలా మున్షీరామ్ దుసాజ్‌తో పాటు రామ్ రఖా, పండిట్ సోమనాథ్ శాస్త్రి, బాల్‌రాజ్, పండిట్ నారాయణ స్వామి, బండారి సత్యనారాయణ, పండిట్ కృష్ణ స్వామి నాయుడులు ముఖ్య పాత్ర నిర్వహించారు.

స్వామి దయానంద సరస్వతి

◆ నాటి సంఘ సేవకులు, ఆర్య సమాజ్ ప్రతినిధులు దీని స్థాపన కోసం విశేషమైన కృషి చేశారు. పేదలకు విద్యా బోధనతో పాటు సామాజిక సేవా కార్యక్రమాలతో సమాజ పురోభివృద్ధికి తనవంతు పాత్ర నిర్వహిస్తూ ఆ దిశగా ముందుకు సాగుతోంది ఈ ఆర్య సమాజ్.

◆ ఆర్య సమాజ్ ఆధ్వర్యంలో సికింద్రాబాద్ హిందీ మహావిద్యాలయ, సరస్వతీ కన్య విద్యాలయాలు నడుస్తున్నాయి. సికింద్రాబాద్ పరిసర ప్రాంతాలకు చెందిన పేద, మధ్య తరగతి విద్యార్థులు ఈ పాఠశాలలో విద్యనభ్యసిస్తున్నారు.

◆ ఆర్య సమాజ్‌లో అనేక ఆధ్యాత్మిక కార్యక్రమాలతో పాటు ప్రేమవివాహాలు కూడా ఇక్కడ జరుగుతుంటాయి. సమాజంలో సమకాలిన పరిస్థితులపై అదే విధంగా భావిభారత పౌరులైన విద్యార్థుల భవిష్యత్ కోసం విద్యావేత్తలు, నిపుణులతో ఇక్కడ అవగాహన కార్యక్రమాలను నిర్వహిస్తుంటారు.

ఉగాది పర్వదినాన పలు కార్యక్రమాలు

ఆర్య సమాజ్ వ్యవస్థాపక దినోత్సవం సందర్భంగా ఈ నెల 13న మంగళవారం ఉగాది పర్వదినాన పలు కార్యక్రమాలను నిర్వహిస్తున్నట్లు ఆర్య సమాజ్ అధ్యక్షులు మాశెట్టి శ్రీనివాస్, కోశాధికారి విజయ్‌కుమార్ చెప్పారు. కోవిడ్ నిబంధనలకు అనుగుణంగా సమాజ మందిరంలో యజ్ఞం, ఆధ్యాత్మిక కార్యక్రమాలతో పాటు ప్రముఖుల చేత ఉపన్యాసాలు విన్పించనున్నట్లు వివరించారు. వేదప్రవ్ శాస్త్రితో పర్వయజ్ఞంతో పాటు పలు కార్యక్రమాలను.. కోవిడ్ నేపథ్యంలో ఎలాంటి హంగు ఆర్భాటాలకు తావులేకుండా సాదాసీదాగా ఆర్య సమాజ్ స్థాపక దినోత్సవాలను నిర్వహిస్తున్నామని చెప్పారు.

దయానందుడి స్ఫూర్తితో..

స్వామి దయానందుడు స్థాపించిన ఆర్య సమాజ్‌ను మరింత విస్తరించడానికి కృషి చేస్తున్నాం. సమాజానికి ఉపయోగపడే అనేక కార్యక్రమాలను నిర్వహిస్తున్నాం. వేదధర్మ ప్రచారాన్ని ప్రజల్లో విస్తృతంగా ప్రచారం చేస్తున్నాం. స్వామి దయానంద సరస్వతీ ఆశయాలను, ఆదర్శాలను సమాజంలోకి తీసుకెళ్లడానికి అనేక కార్యక్రమాలను చేస్తున్నాం.

– మాశెట్టి శ్రీనివాస్,
సికింద్రాబాద్-ఆర్య సమాజ్ అధ్యక్షుడు

సమాజహితం కోసం..

ఆర్య సమాజ్ సమాజ హితం కోసం పనిచేస్తోంది. నిర్మాణాత్మకమైన కార్యక్రమాలతో సమాజ పురోభివృద్ధి దిశగా ఆర్య సమాజ్ కృషి చేస్తోంది. కుల, మత, జాతి విభేదాలకు అతీతంగా లోకకల్యాణం కోసం పాటుపడుతున్నాం.

– కంది విశ్వనాథం,
ఆర్యసమాజ్, మంత్రి

बैबिलोनिया आदि के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। मिस्र और असीरिया की सभ्यताएँ काल की दृष्टि से भारतीय सभ्यता के समान ही प्राचीन थीं। पर उनके बहुत समय पश्चात् यूनान (ग्रीस) और रोम की जो सभ्यताएँ विकसित हुईं, वे भी अब नष्ट हो चुकी हैं। आज प्राचीन ग्रीक एवं रोमन धर्मों का कोई अनुयायी नहीं है। जो विचार-धारा रोमन लोगों को देवी-देवताओं तथा प्राकृतिक शक्तियों की पूजा के लिए प्रेरित करती थी, वह आज के रोमन (इतालियन) लोगों के लिए कोई अर्थ नहीं रखती। पर भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति हजारों साल बीत जाने पर भी अब तक कायम है। भारत का धर्म अब भी वैदिक है। इस देश के पुरोहित आज भी यज्ञकुण्ड में अग्नि का आधान कर वेद-मन्त्रों द्वारा याज्ञिक अनुष्ठान करते हैं। वेद और उपनिषदों द्वारा ज्ञान की जो धारा प्रवाहित की गयी थी, वह आज भी अबाधित रूप से बह रही है। प्राचीन समय में जिन विधर्मियों ने भारत को आक्रान्त किया, वे इस देश के धर्म तथा संस्कृति को अपना कर पूर्णतया भारतीय या आर्य बन गए। जिस इस्लाम ने स्पेन के दक्षिण से लगाकर मध्य एशिया तथा अफगानिस्तान तक सम्पूर्ण भूखण्ड को आक्रान्त कर वहाँ के निवासियों को मुसलमान बना लिया, सदियों तक संघर्ष करने के बाद भी भारत के बीस प्रतिशत लोगों को ही वह अपना अनुयायी बना सका। वस्तुतः, वैदिक धर्म में ऐसी अपूर्व शक्ति है, जिसके कारण वह कभी मर नहीं सकता। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी धर्म के विशुद्ध रूप को पुनःस्थापित करने का प्रयत्न किया, ताकि आर्यावर्त या भारत में एक बार फिर उस शक्ति का संचार हो जाए जिस द्वारा वह सम्पूर्ण विश्व का नेतृत्व कर मानवमात्र का हित-कल्याण कर सके। इस इतिहास के प्रथम भाग में इसी तथ्य का विशद रूप से निरूपण किया गया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना एप्रिल, १८७५ में की थी। सन् १८८३ में उनका देहावसान हो गया। केवल आठ वर्ष वे आर्यसमाज के मार्ग का प्रदर्शन कर सके। आर्यसमाज के इतिहास में इन आठ वर्षों का बहुत महत्त्व है। इस काल में आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी संस्था थी। तब उसके पास कोई धन-सम्पत्ति नहीं थी। लोगों में प्रचलित अन्धविश्वासों तथा सामाजिक कुरीतियों का उस द्वारा खण्डन किया जाता था, ऊँच-नीच और छूत-अछूत के विरुद्ध आवाज उठायी जाती थी और स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, अछूतोद्धार आदि के लिए प्रयत्न किया जाता था। जो लोग उस समय आर्यसमाज के पदाधिकारी व सभासद् बने, वे वस्तुतः अत्यन्त साहसी थे। उन्हें जात-बिरादरी से बहिष्कृत किया गया, उन पर हमले भी किये गए, पर उन्होंने आर्यसमाज के कार्य में शिथिलता नहीं आने दी। ऐसे कर्मठ व्यक्तियों का ही यह कर्तृत्व था कि सन् १८८३ तक ८५ से भी अधिक आर्यसमाज भारत के विभिन्न नगरों में स्थापित हो गए थे और केवल दो साल बाद उनकी संख्या २०० तक पहुँच गयी थी। वर्तमान समय में भारत तथा विदेशों में ५००० के लगभग आर्यसमाज विद्यमान हैं। यह कितना महान् कार्य है, जो आर्य संन्यासियों, विद्वानों, उपदेशकों तथा सर्वसाधारण आर्य सभासदों के प्रयत्न से सम्पादित हुआ है। इस इतिहास में हमें इसी पर प्रकाश डालना है, और साथ ही उस मार्ग को भी प्रदर्शित करना है जिस पर चलकर आर्यसमाज की स्थापना के महान् उद्देश्य को पूरा किया जा सकता है।

-గత సంచిక తరువాయి భాగము...

జీవన కళ

త్రివేణి సంగమము-ఆస్తికత యొక్క ప్రవాహము

-దేవరకొండ దత్తాత్రేయ

3) జగత్‌కర్త పరమేశ్వరుడు ఈ కారణ ప్రకృతితో జగత్తును సృష్టించి, అందులో తన అత్యద్భుత కళాకౌశలముతో మానవ శరీరములను నిర్మించి, అందులో జీవాత్మలను ప్రతిష్ఠించెను. ఈ విధముగ మన జీవన జ్యోతిని వెలిగించిన జగత్ పితా-పరమే శ్వరుని అస్తిత్వము మరియు మహత్వమును గూర్చి మరికొంత విచారించుకొం దాము.

"అన్తి సన్తి న జహాత్యన్తి సంతిం న పశ్యతి ।
దేవస్య పశ్యకావ్యం న మామర న జీర్యతి ॥"

-అథర్వ 10-8-32

ఆ ప్రియతమ ప్రభువే మన ఆత్మకు ఆధారం. మనము అతనిని విడిచి ఉండ లేము. అతని విడిచి ఉండవలెనను కొనినను అతడు మనలను ఒక్క క్షణం కూడా విడిచి పెట్టడు. మనము అతనిని మరిచి పోదాము అనుకొనినను అతడు మనలను ఒక్క క్షణం కూడా మరిచి యుండడు. అతడు మనంతటవ వ్యాపించియున్నాడు. అతడు మనకు అత్యంత సన్నిహితముగా నున్నాడు. అందువలన అతడు మనకంటికి కనబడడు. ఎట్లయితె కంటి సుర్మా కంటికి కనబడదో !

ప్రియ బంధువులారా ! అతనిని చూడవల యునను కొనుచున్నారా రండి ! మీరు ఈ సృష్టి యొక్క నిర్మాణమును దర్శించండి. ఈ అఖిల విశ్వబ్రహ్మాండము అతని కావ్యము. అనగా అతని గుణ కర్మ కలా కౌశలము చూడటమే, అతనిని చూడటము. అదే అతని సాక్షాత్కారము. కార్యమే కర్తకు సంకేతము. **"ఈశావాస్య మిదం సర్వం"** అతడు సంపూర్ణ జడ-చేతనములలో వ్యాపించి యున్నాడు. అతడు విశ్వములోని అను-అణు వులో రమించుచున్నాడు. ఎచ్చట లేదు అతని శోభ-కాంతి-సౌందర్యముఖి దూరము వెళ్లనవ సరము లేదు. కొంచెము మన శరీర రచనపై విచారింతము.

ఎవడు ఈ శరీరముపై చర్మరూప వస్త్రమును ఆచ్చాదించెను. దీని ఆయువును ఎవడు నిర్ధారణ చేసెను. దీనిలో జీవనమును ఎవరు ఏర్పాటు చేసెను. దాని కొరకు బలమును ఎవడిచ్చెను. ఈ శరీరములో కార్యనిర్వహణ కొరకు మన స్సును ఎవడు నిర్ధారణచేసెను. ఆ మహాకవి కావ్యమును సుదీర్ఘముగ విచారించు కొనవల యును. చివరగా **"కళ"** ఉన్నది, కాబట్టి కళా కారుడు ఉండవలెను. బ్రహ్మాండ రచన ఉన్నది. కావున రచయిత సునిశ్చితమై యున్నది. వ్యవస్థ ఉ న్నచోట, వ్యవస్థాపకుడు తప్పక ఉండును.

కొందరు మిత్రుల భావన మేమనగా, విభిన్న రూపములు గల పంచభూత పరమాణులు పరస్పరము కలిసినపుడు ఈ సృష్టి ఏర్పడును. దీనికి నిర్మాత అవసరమేమి లేదని వాదింతురు.

ఒకానొక తండ్రి కొడుకుల మధ్య ఇటువంటి విషయము పైననే మతభేదము ఏర్పడినది. తండ్రి నాస్తికుడు. కొడుకు ఆస్తికుడు. ఒకరోజు తండ్రి గృహము నుండి బయటికి వెళ్లెను. కొడుకు తండ్రి గదిలో ఒక మేజుపైగల రంగు డబ్బాలను చూచి, ఆ రంగులతో గది గోడలపై వివిధ రూపముల చక్కని పుష్ప రూపములను చిత్రించెను. తండ్రి గదిలోనికి ప్రవేశించి ఆశ్చర్యముతో ఈ చిత్రములను ఎవరు వేసినారని అడిగెను. కొడుకు ఆ రంగు డబ్బాల వైపు చూచుచు, నాన్న గారు ! ఈ టేబుల్ పైన ఉన్న రంగులే సహజముగా వివిధ రూపముతో వెళ్లి ఈ చిత్రములుగా మారినవి అని చెప్పెను. తండ్రి ఆగ్రహముతో, నాకేమి పిచ్చి లేదు, ఈ రంగులు వాటికవే వెళ్లి ఈ చిత్రములుగా ఎట్లు చిత్రింపబడును ? అనెను. అప్పుడు కుమా రుడు, నాన్న గారూ ! మీరు చెప్పుచున్నట్లు. పంచభూతముల అణువులు సహజముగా వాటికవే కలిసి ప్రపంచము ఏర్పడ లేదా ? అట్లే ఈ రంగులు పరస్పరము కలిసి ఈ చిత్రములుగా రూపొందుటలో ఆశ్చర్యమే మున్నది, అని ప్రశ్నించెను. తండ్రికి తర్కబోద జ్ఞానము కలిగించినది.

జడ పదార్థములు సహజముగావాటికవి మిశ్రమును కావు. ఒక చేతన సత్తా తన బుద్ధి చతురతతో వస్తు నిర్మాణమునకు పదార్థము లను తగిన పాళ్లలో కలిపి వస్తు నిర్మాణము చేయును. అదే విధముగా ఈ ప్రపంచ సృష్టిని పరమేశ్వ రుడు ప్రకృతి పదార్థములతో నిర్మించెను.

కొందరు మిత్రులకు సందేహము కలుగు తుంది. ఈశ్వరుడు ఉన్నట్లయితె మన కండ్లకు కనబడవలె గదా ? కనబడని దానిని నమ్మెదెట్లా? (ఇందుకు సమాధానము క్రింది ఉదాహరణ సరిపోతుంది)

ఇద్దరు మిత్రులు ఉండిరి. అందులో ఒకరు, నా కంటికి ఏది, కనబడుతుందో, దానినే నేను నమ్ముతాను. కనబడని వాటిని గూర్చి నాకు నమ్మకము లేదు అనుచుండెను. ఒకరోజు విధివశాత్ ఈ మిత్రునకు కడుపులో నొప్పి వచ్చినది. అతడు తన రెండవ మిత్రునితో, మిత్రమా ! నాకు కడుపులో చాలా నొప్పిగా నున్నది. నేను పాఠశాలకు వెళ్లలేను. భరింపరాని నొప్పి వస్తున్నదని బాధతో చెప్పెను. రెండవ మిత్రుడు సహజముగా నవ్వుచు, మిత్రమా ! నీవు పాఠసాలకు ఇష్టము లేక వెళ్లక పోతె వెళ్లకు. అంతేకాని నాతో కడుపులో నొప్పి వస్తున్నదని అబద్ధము ఎందుకు చెప్పుచున్నావు. నొప్పి అంటే ఏమిటి ? అది ఎట్లు ఉంటుంది ? అది నాకు కనబడుత లేదు గదా ? నేను నమ్మే దెట్లు అని అనెను. నాకు భరింపరాని నొప్పి వస్తున్నది. నీకు వేళాకోలముగా నున్నదా ? నేను అనుభవించె నొప్పి నీకంటికి ఎలా కనబడుతుంది ? అని చిరాకుగా సమాధా నము చెప్పెను. మిత్రమా ! నీకు ఇప్పుడు అనుభవముతో అర్థమయ్యే ఉంటుంది.

లోకములో కంటికి కనబడని సత్తాత్మిక తత్వములు చాలా ఉన్నవి.

మిత్రులారా ! రూపము కన్నులకు సంబంధిం చిన విషయము. రూపములను కన్నులతోనే చూడగలము. శబ్దము చెవులకు సంబంధించిన విషయము. గందము వాసన ముక్కుకు సంబంధించిన విషయము. రసము నాలుకకు సంబంధించిన విషయము. స్పర్శ జ్ఞానము చర్మమునకు సంబంధించిన విషయము. ఆయా విషయములు ఆయా ఇంద్రియములు గ్రహించును. ఒకదాని విషయమును మరొక ఇంద్రియము గ్రహింపజాలదు. పరమాత్మ తత్వము ఇంఅరదియములకు విషయము కాదు. ఇంద్రియము లేవియు పరమాత్మ తత్వమును గ్రహింపజాలవు. ఇది ఇంద్రియా తీతమైనది. అంతేకాదు. మనస్సు బుద్ధి అను అంతరేంద్రియములు గూడా పరమేశ్వరుని గ్రహింప జాలవు. ఆ పరమాత్మ కేవలము ఆత్మకు విషయము. ఆత్మ మాత్రమే పరమేశ్వరుని గ్రహించి, అనుభూతి, అనుభవమును పొందును. నిర్మల నిరావరణ అచంచల ఆత్మ యందు మాత్రమే పరమేశ్వ రుని సుభోదక అనుభవము కలుగును.

కొందరు మిత్రులకు మరొక సందేహము కలుగుచున్నది. అదేమనగా, ఈశ్వరుని అస్తిత్వ మును అంగీకరించుచున్నాము. కాని, అతనికి ఆకార రూపములో, కాళ్లు-చేతులు ఇతర అవసరముల అవయవములు ఏవి లేవు కదా ? అతడు ఈ ప్రపంచ పదార్థములను ఎట్లు తయారు చేసినాడు ?

మిత్రులారా ! ఇచ్చట మనము ఒక విషయ మును బాగా గుర్తు పెట్టు కొనవలెను. కాళ్ల-చేతులు మరియు ఇతర బాహ్య అవయవము లన్నియు మన శరీరమునకు బయటి అవసర ముల కొరకే పనికి వచ్చును. కాని శరీరము లోపలి పనులకు ఇవి ఏమి పని చేయవు. మనము ఒక పుస్తకమును ఎత్తవలసినపుడు దానినిచేతితో ఎత్తెదము. కాని, చేతినే ఎత్త వలసి వచ్చినప్పుడు ఆ చేతిని, రెండవ చేతితో ఎత్తె దమా ? మనము మన తలను తిప్పవలెనన్న, కండ్లు మూయవలె నన్నను, కన్నులు తెరువ వలెనన్నను, ముక్కుతో వాసన చూడవలె నన్నను, కాళ్లతో నడువ వలెనన్నను, మనస్సుతో సంకల్పముచేసి, బుద్ధితో విచారించి చేయు దుము. ఈ పనులన్నియు చేతులు లేకుండగనే చేయుగలము ఎందుకనగా మన శరీరములో వ్యాపించి యున్న ఆత్మ తత్వము ఈ అవయవము లతో, గతిని కలిగించును. అది ఇవన్ని అవయవ ములలో వ్యాపించి యున్నది. అదే విధముగా పరమ పిత పరమేశ్వరుడు సంపూర్ణ సృష్టిలో వ్యాపించి యున్నాడు. కావున అతనికి సృష్టి నిర్మా ణము కొరకు ఈ బయటి అవయవ ములు అవసరము లేదు. **"ఈశావాస్య మిదం సర్వం"** ఈ వేద మంత్రార్థము, ఈశ్వరుడు సర్వవ్యాప కుడు, సర్వశక్తిమంతుడు, సర్వజ్ఞుడు మరియు నిరాకారుడని ప్రతిపాదించు చున్నది.

మిత్రులారా ! సజ్జనులారా ! ప్రకృతి-జీవాత్మ పరమాత్మ ఈ మూడు శాశ్విత సత్తా కలిగిన తత్వములు ఉన్నావని ఇంత వరకు మనము తెలిసి కొనినాము. ఈ మూడు లేకుండా లోకములో ఏ కార్యము జరుగదు. అయితె ఈ మూడింటిలో అంతరవే మున్నది ? ఈ మూడు పరస్పరము ఏ విధముగా సంబంధము కలిగి యున్నవి ? వాటి ఉపయోగమేమి, తెలుసు కొన వలయును.

ఈ మూడు కూడ సత్తా కలిగిన సత్ పదార్థ ములు. ఈ మూడింటిలో ప్రకృతి విశేషమేమ నగా, ఇది సత్ పదార్థము. ఇది సత్ పదార్థము తోపాటు చిత్ కూడా కలిగి యున్నది. జీవాత్మ సత్+చిత్‌గా నున్నది. ఇందు చైతన్యత-ఇచ్ఛా- ద్వేషము-జ్ఞానము-ప్రయత్నము-సుఖము- దుఃఖము యొక్క అనుభూతి అనుభవ విశేషత కలదు. పరమాత్మలో, జీవాత్మకన్న మరొక విశేషత "ఆనందము" ఉన్నది. అనగా పరమే శ్వరుడు సత్+చిత్+ఆనందస్వరూపుడు. అని తెలియ చున్నది.

ఓమ్ ఉద్వయం తమ సస్పరిస్వః పశ్యంత ఉత్తరం । దేవం దేవత్రా సూర్యము గన్మ జ్యోతి రుత్తరమ్ ॥ -యజు. 33-54

వైదిక సంధ్య ఉపస్థాన మంత్రములో ఈ ప్రథమ మంత్రము, ఈశ్వర-జీవ-ప్రకృతి. ఈ మూడింటి అంతరములను చాలా సుందరముగా వర్ణించబడినది. మంత్రములో మూడు శబ్దములు న్నవి. 1) సత్, 2) ఉత్తరము, 3) ఉత్తమం. అనగా ప్రకృతి సత్-జీవాత్మ-ఉత్తరం మరియు పరమాత్మ ఉత్తమమ్‌గా శ్రేష్ఠత కలిగి యున్నవి. ప్రకృతి (Good), జీవాత్మ (better), పరమాత్మ (best)

ఔను ప్రకృతి కూడా శ్రేష్ఠమైనది. ఇది చెడ్డది నికృష్టమైనది కాదు. విడువ దగినది కాదు. కొందరు అనుకొనుచున్నట్లు ఈ ప్రకృతి మాయ లేక మోసము కాదు. ప్రకృతి మాత వంటిది. దీనిని ఈ విధముగా నిందించుట సరియైనది కాదు. పరమేశ్వ రుడు-ప్రకృతి-పరమాణువులతో అత్యంత మనోహరమైన సృష్టిని రచించి, జీవాత్మలకు అన్నాది ఆహార పదార్థములతో తృప్తి కలిగించుచున్నాడు. జీవాత్మ ప్రకృతి కన్న శ్రేష్ఠ మైనది. పరమేశ్వరునిలో ఆనంద గుణము విశేషముగా నున్నది. జీవాత్మలో ఆనందము తక్కువగా నున్నది. కావున జీవాత్మపరమా త్మను ఆశ్రయించి అతనిలోని ఆనందమును అనుభవిం చుటకు నిరంతరము ప్రయత్నించ వలెను. జీవాత్మకు ఆనందము మరియు శాంతి అవసరము. ఈ గుణములు ఈశ్వరుని యందే ఉన్నది.

మిత్రులారా ! మాతలారా ! ఈశ్వరుడు ఎచ్చటో ఒక చోట విశేష స్థానమందు కలదని భావించు కొనుచున్నారు. కొందరు నాల్గవ ఆకాశముపైన, మరికొందరు ఏడవ ఆకాశము పైన మరికొందరు క్షీరసాగర మందు శయనించి యున్నాడని చెప్పుచు న్నారు. కొందరు నిరాకా రుడు న్యాయకారి యైన ఆ పరమేశ్వరునికి వివిధ రూపములను కల్పించి నానా విధ రూపములలో చిత్ర విచిత్రముగా మూర్తులను తయారు చేసి, వస్త్రములలో చిత్ర విచిత్రముగా మూర్తులను తయారు చేసి,

వస్త్రములతో అలంకరించి, బంగారు కిరీటములను వజ్రవైడూర్య ఆభరణ ములను ధరింపజేసి ఆరాధన సమారాధన భోగ ప్రసాదములతో ఒక సజీవ మానవునికి వలె తినిపించి త్రాగించుటకు ప్రయత్నము చేయుచు న్నారు. ఆ చేతన విగ్రహమునకు ముందు చేతులు జోడించి, వివిధ కోరికలను తీర్చుమని ప్రార్థిం చుచున్నారు. అంతేకాదు మా కోరికలు నేరవేర్చినచో మీకు బహుమతులు ఇవ్వగలమని ఆశ చూపించు చున్నారు. ఆహా ! బుద్ధి జీవులకు ఎంతటి అజ్ఞానము అవరించినది !

ఈశ్వరుడు సచ్చిదానంద స్వరూపుడు-నిరాకారుడు-సర్వశక్తిమంతుడు-దయాళువు-ఆజన్మ నిర్వికారుడు. అనాది అనుపముడు-సర్వాధా రుడు-అమరుడు-అభయుడు-నిత్యుడు పవిత్రుడు మరియు సృష్టికర్త. ఈశ్వరుడు ఒక్కడే జీవాత్మలు అనేకములు-ఈశ్వరుడు సర్వజ్ఞుడు. జీవాత్మ అల్పుడు-ఈశ్వరుడు విభుడు-జీవాత్మ అణు-ఈ విధముగా ఈశ్వర జీవాత్మలో నర నారాయణ భేదమున్నది.

ఓ నా ఆత్మ స్వరూపులారా ! నీవు నీ అత్మ గౌరవాన్ని తెలుసుకో ! పరమాత్ముడు నీ బంధువు. **"సనోబందుర్జనితా"** మరియు నీ సఖుడు. **"సయూజా సఖయా"** ఘనిష్ట మిత్రుడు. నీవు ఈ సఖుని ఆదర్శముగా యెంచుకొని ప్రకృతి ఫలములను కర్మాను సారము అనుభవింపుము. కాని వాటి యందు ఆసక్తి మమకారము పెంచుకొ నవద్దు. **"త్యక్తైన భుంజీథా"** అతని వలన ప్రవత్త మైన భోగములను త్యాగపూర్వకముగా అనుభ వించు. **"సంయమః ఖలు జీవనం"** సంయ మమే జీవనము మరియు అదే జీవన కళ.

జీవాత్మ ఒక యాత్రికుడు. అతని యాత్ర యొక్క లక్ష్యము ఆనందస్రోత శాంతి ధామ పరమాత్ముని ప్రాప్తి. కాని ఈ యాత్ర కొరకు సాధనములు కావలెనుగదా ! ఈ శరీరము ఈ ఇంద్రియములు, ఈ ధనము-ఈ వైభవము-ఈ సంపూర్ణ ప్రకృతి. ప్రకృతి జన్య పదార్థము లన్నియు జీవాత్మ యాత్రకు సాధనములు. కఠోపనిషత్ ఋషి ఈ విధముగా చెప్పెను.

"ఆత్మానం రథినంబిద్ది శరీరం రథమేవతు ।
బుద్ధింతు సారథిం బుద్ది మనః పగ్రహమేవచ॥
ఇంద్రియాని హయ హయనాహుర్విష యాంస్తు షే గోచరాన్ । ఆత్మేద్రియ మనోయుక్తం భోక్తెత్యా హుర్మనీషినః ॥

ఈ శరీరం-ఇంద్రియములు-బుద్ధి-మనస్సు ఇవన్నియు సాధనములు, రథికుడైన ఆత్మ ప్రియతమ ప్రభువును చేరుట లక్ష్యమైయున్నది. మన ఈ శరీరము దైవదత్తమైన నావ-నౌక-ఈ భవసాగమును దాటి భగవంతుని వొడిలో చేరు టకు దివ్య సాధనములు-అదే విధముగ మన పరవా రము-మన సమాజము-మన రాష్ట్రము ప్రభంవుకు-ప్రియమ్మైన ఈ సంపూర్ణ విశ్వబ్రహ్మం డము మన యాత్ర-లక్షము చేరుటకు అత్యధిక సాధనములు. ఈ యాత్రలో విభిన్నములైన మజిలీలున్నవి. విశ్రాంతి స్థలములున్నవి. యాత్రి కుడైన జీవాత్మకు నూతన శక్తిని ప్రధానము చేయు ఈ సంసారిక కర్తవ్య కర్మలు జీవాత్మకు బంధన ములు కాకూడదు. ఇవి బంధన ములు ఎప్పుడు కాగలవనగా, యెప్పుడైతె జీవుడు తన సాధనము లనే సాధ్యమనే భావము కలిగి యుండునో, అప్పుడు అవి బంధనములు అగును. నదిని దాటి వొడ్డునకు చేరుటకు నావ సాధనము. కాని, మనము నావ యొక్క అందమునకు లోబడి అందులో కూర్చొని దానియందు ఆసక్తి పెంచు కొనినచో, ఆ నావ మనలను నది దాటించ లేదు. అప్పుడు ఆ నావయే మన పురోగమ నమునకు బంధకము కాగలదు. మనము లక్షము చేరుకొన లేము. ఈ దోషము నావది కాదు. ఇది మన ఆసక్తి మమకారముది. దోషము ప్రపంచ పదార్థ ములది కాదు. ఈ పగార్థములు మన ఉపయో గము కొరకు లభించినవి. సాధన రూపములో ఉపయో గించు కొనుటకు ఇవి లభించినవి. వాటిని మనము ఉపయోగించు కొనవలెను. కాని ఇచ్చట మనము వేదమాత యొక్క సందేశమును మరువ వద్దు.

"త్యక్తేన భుంజీథా" త్యాగపూర్వకముగా అనుభవించ వలెను. నావ మనకు లభించినది ఉపయోగించుకొని విడిచి పెట్టుట కొరకు అనగా ప్రపంచ పదార్థ ములను అనుభవించు, కాని దాని యందు లగ్నమై అదే సాధ్యముగా భావించ కూడదు. దానిని పరిమిత సీమలో అనుభవించి త్యాగ భావముతో విసర్జించవలెను. ఈ త్యాగము మరియు భోగముల సమన్వయమే, జీవనము యొక్క జీవించె కళ, మన భోగవే యోగరూపము కావలెను. యజ్ఞమయము కావలెను. ఈ తత్వ జ్ఞానమును మనకు వేదమాతయే తెలుపుచున్నది. వేదమాత తన అమృత పుత్రుడైన మానవునకు జీవనకళను నేర్పుచు ఉపదేశించినది. **"మాగృదః కస్య సిద్ధనం"** ఓ నా ప్రియమైన పుత్రా ! నీవు లోభివి కావద్దు. సంయమమును విడువ వద్దు. యెవరి అధికారమును బలవంతముగా లాగు కొనవద్దు. మరొక మాట ! బాగా గుర్తుంచు కొనుము. నీ వద్ద ఏదైతే ఉన్నదో విద్యా-బలము ఐశ్వర్యము ఇవన్నియు నీవు కావు. **"కస్యసిద్ధనం"** ఇవి యన్నియు సుఖస్వరూపుడైన పరమేశ్వరు నివి. కావున అతని వస్తువులను, అతని చరణ ముల యందు అర్పించుచు ఒక విధమైన అలౌకిక ఆనందమును అనుభవింపుము. **"ఇదన్నమమ"** ఇది నాది కాదు. ఇది నా-ప్రభు వుది. ఇటువంటి భావనయే యజ్ఞమయ భావన. **"అయం యజ్ఞో విశ్వస్యనాభిః"** ఈ యజ్ఞ భావనయే విశ్వ చక్రము యొక్క నాభి. ఈ యజ్ఞ మయ జీవనమే జీవన కళా రహస్యము. ఈ యజ్ఞ జీవనమును మన నిజ జీవితములో ప్రతి ష్టించు కొనవలెను. జీవన కళను మనము మన పరివారిక, సామాజిక, రాష్ట్రీయ మరియు విశ్వజీవనములో ఉపయోగించు కొనవలెను. దాని వలన శ్రేష్ట ప్రకృతి సాధానములు శ్రేష్టతర జీవాత్మకు గౌరవ మును ప్రసాదించును.

ఓమ్ శమ్

"వేదేషు సర్వా విద్యాః సంతి మూలోద్దేశ్యతః"

స్వనామధన్యుడు, వేదాచార్యుడు మహర్షి దయానంద సరస్వతీ "వేదేషు సర్వా విద్యాః సంతి మూలోద్దేశ్యతః" అను దివ్యతత్త్వాన్ని చాటినాడు. ప్రాచీన ఋషుల, మునుల పరంపర ద్వారా, వారి రచనల ద్వారా ఈ విషయము ప్రాచీన కాలము నుండియే ప్రసిద్ధము.

"భూతం భవ్యం భవిష్యం చ సర్వం వేదాత్ ప్రసిద్ధ్యతి" అను మనుమహర్షి వాక్యములే ఇందుకు ప్రమాణము. ప్రాచీన గ్రంథాలలో ఇందుకు విరివిగా ప్రమాణాలు లభించును. సమాజ తంత్రము, రాజ తంత్రము, అర్థ తంత్రము, యంత్ర తంత్రము, విమాన విజ్ఞానము, భౌతిక విజ్ఞానము, రసాయన తంత్రము, ఆయుర్వేదము, ధనుర్వేదము, గంధర్వ వేదము, గణిత శాస్త్రము, జ్యామితి, జ్యోతిష శాస్త్రము, ఖగోళ శాస్త్రము మున్నగు సమస్త విజ్ఞానముల మూల సూత్రములు వేదములలో ప్రతిపాదింపబడినవి. ఈ విషయమును వైదిక విద్వాంసులు ప్రాచీన కాలము నుండియే పరంపరగా నెఱుగుదురు. ఆస్తికులందరు దీనిని అక్షుణ్ణముగా విశ్వసించుచున్నారు. వేదముల నిదే దృష్టతో పరిశీలించుట కిది ప్రతి ఆలోచనాపరుని ప్రేరేపించును. అట్లు పరిశీలించినచో వేదములోని నిగూఢతమ విజ్ఞాన రత్నములు లభించును. వాటి తేజోమయ కిరణాలు మానవ జీవితమును అలంకరించుటకు సహాయపడును. ఈ దృష్టితో ఆలోచించుట వలన వేదములో గనిపించిన విద్యుత్ విజ్ఞానము విషయమున కొద్దిగా వ్రాయ సాహసించుచున్నాను. విద్వాంసులు ఈ విషయమున ఇంకను పరిశోధించగలరని ఆశించుచున్నాను.

సంస్కృత సాహిత్యములోను, సాధారణ సాహిత్యములోను విద్యుత్తుకొరకు అనేక శబ్దాలు వాడబడినవి. ఉదాహరణకు చలా, చంచలా, తడిత్, విద్యుత్, జ్యోతి, ఇంద్ర, అప్సరా మొదలగునవి. దీనివలన ప్రాచీన కాలమున, జనులకు విద్యుత్తు అజ్ఞానముగాలేకుండె నని, తెలిసియేయుండె నని స్పష్టమగుచున్నది. అది మేఘములోని మెఱుపే కావచ్చును. మేఘముల రాపిడివల్ల ఉత్పన్నమగు విద్యుల్లత గురించి గూడ వారెఱిగియుండి.

వినా వాతం వినా వర్షం విద్యుత్ప్రపతనం వినా । వినా హస్తికృతాన్ దోషాన్ కేనేమౌ పాతితౌ ద్రుమౌ ॥

అద్యనాటక కర్త భాసుడు "మధ్యమ వ్యాయోగ" మను సుప్రసిద్ధ నాటకములో తడిత్ శబ్దము ద్వారా విద్యుత్తును పరిచయము చేసినాడు.

తరుణ రవి కిరణ ప్రకీర్ణకేశో భ్రుకుటిపటోజ్జ్వల పింగలాయతాక్షః । సతడిదివ ఘనః సకంఠసూత్రో యుగనిధనే ప్రతిమాకృతిర్హరస్య ॥

ఇచట "సతడిదివ ఘనః" అనెడి శబ్దము ఆలోచింపదగియున్నది. ఇట్లే కవి కులగురువగు కాళిదాసు గూడ 'మేఘదూత'లో

"మా భూదేవం క్షణమపి ద తే విద్యుతా విప్రయోగః"

అని పేర్కొన్నాడు "ఇందు విద్యుతా విప్రయోగః" అనెడి శబ్దములు గమనింపదగియున్నవి. ఉపనిషత్తులలో గూడ "నేమా విద్యుతో భాతి కుతోऽయమగ్నిః" మొదలగు అనేక చోట్ల 'విద్యుత్తు' ప్రతిపాదనగలదు. వేదాలలో అడుగడుగున 'విద్యుత్తు' ప్రయోగము కాననగును

ఋగ్వేదములో 'అచ్ఛావదేతి' దశ ఋచలు గల సూక్తములో "ప్రవాతా వాంతి పాతయంతి విద్యుతః" అను వర్ణన గలదు. విస్తార భయమున వివరముగా వ్రాయుట లేదు. సంకేత మాత్రము సరిపోగలదు. ఇంతటితోనే మన ప్రాచీనులు శబ్దమును, దాన్ని్ధ్రమును బాగుగా నెఱిగినవారని తెలియును. దివ్యశక్తి సంపన్నమైన ఈ విద్యుత్తును వశపరచుకొని మానవాధీన మొనర్చు విధానమును యజుర్వేదములోని దిగువ మంత్రము ఉపదేశించుచున్నది.

వైశ్వానరోऽ దబ్ధస్తమోసాऽ అగ్నిర్నః పాతు దురితాదవద్యాత్ ॥ యజు. 4-15 ॥

ఈ మంత్ర భాగము నుండి అగ్ని విద్యుత్తుల ప్రకరణము ప్రార్భమై దిగున మంత్రముల వరకు కొనసాగుచున్నది.

త్వమగ్నే వ్రతపాऽ అసి దేవऽ ఆమర్త్యేష్వా । తం యజ్ఞేష్వీడ్యః రాస్వేయత్సోమా భూయో భర దేవోనః సవితా వసోర్దాతా వస్వదాత్ ॥యజు. 4-16॥

ఏషాతే శుక్రతనూరేతద్వర్చస్తయా సంభవ భ్రాజం గచ్ఛ । జూధసి ధృతా మనసా జుష్టా విష్ణవే ॥ యజు. 4-17 ॥

తస్యాస్తే సత్యసవనః ప్రసవే తన్వోయంత్రమశీయ స్వాహా శుక్రమసి చంద్రమస్యమృతమసి వైశ్వదేవమసి ॥ యజు 4-18 ॥

చిదసి మనాసి ధీరసి దక్షిణాసి క్షత్రియాసి యజ్ఞియా స్యదితిరస్యుభయతః శీర్ష్ణీ । సా నః సుప్రాచీ సుప్రతీచ్యేధి మిత్రస్త్వా పది బధ్నీ తాం పూషాధ్వన స్పాత్వింద్రాయాధ్యక్షాయ ॥ ॥ యజు 4-19 ॥

ఈ మంత్రముల దేవత "అగ్ని మరియు వాగ్విద్యుత్తు". మంత్రములో ప్రతిపాదించపబడిన విషయమే దేవత-"యా తేనోచ్యతేసా దేవతేతి". పై మంత్రములలో అగ్ని మరియు విద్యుత్తు వర్ణన గలదు. అగ్నివలెనే విద్యుత్తు గూడ వ్యాపకము. సామాన్య సూక్ష్మ దృష్టితో చూచిన విద్యుత్తు, అగ్నిలో సామ్య మున్నది. విశేషముగా పరికించిన భిన్నత్వము కనబడును. కాల్చుట, ప్రకాశము రెండింటిలో సమాన గుణములే. కేవలము ఆకర్షణ, వికర్షణ గుణములు విద్యుత్తులో అధికముగా నున్నవి. ఈ విశ్వము పాంచభౌతికము. ఈ పంచ భూతములలో అగ్నియే ప్రధాన తత్త్వము. అది శక్తిశాలి, వ్యాపక గుణము కల దగుటయే అందుకు కారణము. ఇతర భూతములు ఏకదేశీయములు-స్థూలములు. ప్రథమ, ప్రధాన స్థానము అగ్నిదే. "అగ్నిర్వైదేవానాం ప్రథమః"-దివ్యశక్తి గల ఈ అగ్ని గుణముల కార్యములు దిగ్దర్శనముగా మంత్రములో తెలుపబడినవి, ఈ వైశ్వానరాగ్ని సమస్త దురితముల నుండి కాపాడునది. అట్టి అగ్ని దుష్ప్రాప్య పదార్థముల నొసగి మనను రక్షించుగాక అని ప్రార్థించబడినది.

ఈ మంత్రములలో పైన పేర్కొనబడిన విద్యుదగ్ని గుణధర్మ స్వభావములు వర్ణించబడినవి. (త్వమగ్నే వ్రతపాऽ అసి) హే అగ్నే ! నీవు వ్రతపా=నియమములను స్థాపించుదానవు, అనగా కొన్ని నియమములు కలదానవు. మొదట వానిని అర్థము చేసికొనవలయును. (తం దేవ అమర్త్యేషు యజ్ఞేష్విడ్యః)-నీవు ఈమర్త్య-మరణ ధర్మము గల-అనిత్య పక్ష తత్త్వములలో దివ్యము, పూర్ణమునై యున్నావు. శ్రేష్ఠ కర్మలలో ఈడ్యః-ఉపాసింపదగియున్నావు ఉపయోగింపదగి యున్నావు స్తుతింప దగి యున్నావు. + + + మరియు వసోర్దాతా వస్వదాత్-సమస్త విధముల సంపత్తిని, శక్తిని ఒసగుదానవు. అనగా విద్యుదగ్నిని ప్రయోగించి వివిధ సంపదలను-సమృద్ధులను పొందవచ్చును.

రెండవ మంత్రమున (ఏషా తే శుక్రతనూః ఏతద్వర్చస్తయా) సి యీ శుభ్ర ప్రకాశవంతమైన రేఖ మరియు (వర్చః) తేజస్సు, దహించు శక్తి అద్భుతమైనది. (సంభవ భ్రాజం గచ్ఛ)-నీవు ఉద్భవించి ప్రకట మగుము. (మనసా ధృతా జుష్టా చ విష్ణవే జ్యూరసి)-నిన్ను వహ్ని మత్తా ధృతము-పట్టుకొన యోగ్యము మరియు (జుష్టా)-ఉపయోగింపబడుటకు తగినట్లు చేయగల్గితిమేని ఇంక చెప్పవలసిన దేముండును ! (జూరసి) మిక్కిలి వేగవతి వగుట వలన ప్రపంచమునకెంతో కల్యాణము చేకూర్చ గలుగుదువు.

पृ. ७ का शेष

में ही समाप्त किया गया, उस स्थान पर जो कि आर्य समाज की इन प्रवृत्तियों से बहुत दूर है जिसका कि उल्लेख पुस्तक में हुआ है । यहीकारण है कि इस पुस्तक के प्रणयन में आर्य समाज के नेताओं का बहुमूल्य परामर्श भीप्राप्त नहीं किया जा सका । मेरा सतत प्रयत्न सारी समस्याओं का निर्वेयक्तिक तथा पूर्वाग्रह रहित मूल्यांकन करने का रहा है, परन्तु मैं नहीं समझता कि ऐसा करने में मैं किस सीमा तक सफल रहा हूँ । कारण स्पष्ट है । जो व्यक्ति जिस प्रसंग में जितना अधिक लिप्त हो उससे यह अपेक्षा करना कठिन होगा कि वह उतना ही निर्लिप्त होकर उस प्रसंग की आलोचना कर सके । विषय वस्तु की दृष्टि से यह ग्रन्थ अपने ढंग का प्रथम ही है तथा आगामी संस्करणों में इसे परिमार्जित किया जा सकता है, यदि यह उन लोगों का प्रशंसा भाजन बन सके जिनके कि लिए यह रचा गया है ।

पुस्तक में दिए गए वेदमन्त्र लाला गोकुलचन्द की पुस्तक Message of the Vedas तथा बाबा छज्जू सिंहकी पुस्तक The Teachings of the Arya Samaj से लिए गए हैं । मैंने इन मन्त्रों का अनुवाद वही किया है जिसे मैंने सही समझा है, यद्यपि मैं मानता हूँ कि वेदानुवाद करने के अपेक्षित गुणोंका मुझमें अभाव है । यह अनुवाद पाश्चात्य विद्वानों द्वारा किए गए अनुवाद के बहुत निकट हैं ।

मैं उन लेखकों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ जिनके ग्रन्थों को मैंने बहुशः उद्धृत किया है तथा उन मासिक तथा अन्य पत्रों के सम्पादकों का भी आभारी हूँ जिनका मैंने प्रयोग किया है । इसके साथ-साथ में प्रो. सिडनी वेब. का भी अतिशय कृतज्ञ हूँ जिन्होंने पुस्तक की पान्डुलिपि पढ़ कर भूमिका लिखने का कष्ट किया । मैं श्री वेब तथा अबकी पत्नी का ऋणी हूँ उस उत्साह दर्शन के लिए, जिसने मुजे ग्रन्थ लिखने के लिए प्रेरित किया । इसी दम्पती ने मुझे आर्य समाज के हित की दृष्टि से इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा दी । मैं अपने इन मित्र को बी धन्यवाद अर्पित करता हूँ । श्री डब्लू.एफ. वेस्ट ब्रुक ने पुस्तक की पांडुलिपि को पढ़ कर अनेक मूल्यवान सुझाव दिए है उन्हें भी धन्यावाद देता हूँ ।

लंदन -लाजपतराय

अक्टूबर १३, सन् १९१४ ई.

पृ. ५ का शेष

डॉ. अंबेडकर का राजनैतिक व वैचारिक जीवन दो भागों में बाँटा जा सकता है । आज़ादी से पूर्व और आज़ादी के बाद का अंबेडकर का जीवन । उन्होंने देश की भावनाओं तथा संगठित, समान व सुदृढ़ राष्ट्र को ध्यान में रखकर संविधान का प्रारूप तैयार किया । देश के अधिकांश श्रम क़ानून अंबेडकर की ही देन हैं । कामकाजी महिलाओं को उन्होंने मातृत्व अवकाश का लाभ दिया, जिसे वर्तमान में मोदी सरकार ने १२ से बढ़ाकर २६ माह कर दिया ।

यह संतोषजनक है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने बाबासाहेबके सपने को साकार करने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं । छात्रवृत्ति से लेकर बैंकों के ऋण तक की कई योजनाएँ समाज के गरीब और वंचित वर्गों की मदद के लिए बनाई गई हैं ।

सन् १९९० में, उन्हें मरणोपरान्त भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया । भारत सहित पूरी दुनिया में १४ अप्रैल को उनकी जयंती मनाई जाती है । अगले साल २०२२ में हम आज़ादी की ७५वीं वर्षगाँठ मना रहे हैं, लेकिन आज भी डॉ. अंबेडकर द्वारा लड़ी गई समाजिक बुराइयों को पूरी तरह मिटाया नहीं जा सका है । आज भी संकीर्ण मानसिकता के लोग समुदायों के बीच नफरत फैलाते और उनसे भेदभाव करते हैं । यह विडंबना है कि इस तरहकी शिक्षा के बाद भी उन्हें कुछ लोगों ने अछूत माना । आज भीदेश में कुछ लोग अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण समाप्त होने का झूठा प्रचार कर रहे हैं । लेकिन, जब तक देश में सामाजिक भेदभाव समाप्त नहीं हो जाता, इस वर्ग को आरक्षण की सुविधा मिलते रहेगी । देश में सामाजिक एवं आर्थिक न्याय, सौहार्द, समानता कायम करना ही बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर को सच्ची श्रद्धांजलि होगी । हमारे शैक्षणिक संस्थानों को बाबासाहेब के सपनों के भारत की नींव रखनी चाहिए, क्योंकि सामाजिक असमानताओं को समाप्त करने के लिए शिक्षा ही एकमात्र हथियार है, जो अभी भी बड़ी संख्या से लगों की मानसिकता को प्रबावित करता है । डॉ. अंबेडकर जननायक थे । वह केवल दलितों के नेता नहीं है बल्कि देश के १३० करोड लोगों के नेता है, जो उनके दिलों में बसते हैं ।

श्रद्धांजलि

आर्य पुरोहित पं. सुशील कुमार जी का निधन

आर्य पुरोहित पं. सुशील कुमार जी का देहावसान लम्बी बीमारी के बाद में दि. ९-४-२०२१ के दिन हैदराबाद में हुआ । आप संस्कृत भाषा के अच्छे विद्वान थे । आप बंगलादेश युद्ध के समय पूर्वी बंगाल से रेफ्यूजी के तौर पर भारत में आए थे । भारत सरकार ने बंगाली भाईयों को शरण देकर अनेकों जगह क्यांप बनाकर इन्हें सहारा दिया । तेलंगाना में अदिलाबाद जिले के ईज़गाँव के परिसर प्रांत में सारे बंगाली भाईयों को सरकार ने शरण दिया था । आप दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार में अपना अध्ययन पूरा कर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार अपना जीवन लगाया । आप मृदुभाषी व सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे । अनेकों आर्य पुरोहितों से आपका आत्मीय सम्वंध रहा है । आपकी बीमारी में ईज़गाँव सहित अनेकों लोगों ने विशेषकर उनके मित्र मण्डली ने आर्थिक सहयोग दिया । आर्य प्रतिनिधि सभा ने हार्थिक सहयोग प्रदान किया । आर्य सुशील जी की अत्येष्टि पूर्ण वैदिक विधान से सम्पन्न की गई जिसमें प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री हरिकिशन जी वेदालंकार तथा पं. प्रियदत्त शास्त्री जी ने भाग लेकर सम्पन्न करवाया । अन्य पुरोहित महानुभावों का तथा डी.ए.वी. सफिलगुड़ा के संस्कृत अध्यापकों का विशेष सहयोग रहा ।

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना, दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को सद्‌गति प्रदान कर दुःखी परिवार को कष्ट सहने का साहस दें ।

-विठ्ठल राव आर्य प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना

प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में

पुरोहित व सिद्धांत प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 24 अप्रैल 2021 से 9 मई 2021 रविवार तक

स्थान : पं. नरेन्द्र भवन, राजमोहल्ला, नारायणगुडा, हैदराबाद

21 वर्ष से **61** वर्ष के आयु रखनेवाले महानुभाव (पुरुष व महिलाएं व परिवार सहित) जो वैदिक सिद्धांतों की जानकारी लेने में तथा पुरोहिताई के कार्य में आसक्ति रखते हों ऐसे महानुभाव प्रतिनिधि सभा के संयोजन में आयोजित सिद्धांत व पुरोहित प्रशिक्षण शिविर में भाग ले सकते है। भाग लेने वाले महानुभाव रु. **500/-** सभा में जमा कर अपना नाम अंकित (रजिस्टर) करवा लें। पंजीकृत व्यक्ति ही शिविर में भाग ले सकते है। शिविर में भाग लेने वालों के लिए अनिवार्य होगा कि वे पूरे **15** दिन इसी कार्य के लिए सुरक्षित रख लें।

शिविर संयोजक : श्री हरिकिशन जी वेदालंकार, उपप्रधान सभा
प्रशिक्षक आचार्य : डॉ. वसुधा शास्त्री जी
श्री पं. अरविंद शास्त्री जी, आचार्य विश्वश्रवा जी
आचार्या सुमेधा जी, आचार्य प्रियदत्त शास्त्री जी
आंचार्य वेदमित्र जी, आचार्य सत्यव्रत जी व

अन्य प्रांतीय तथा राष्ट्रीय आचार्य भी प्रशिक्षण देंगे। भाग लेने वाले शिविरार्थि अपना आवश्यक सामान अपने साथ लेते आएंगे। सभी शिविरार्थियों को **24-04-2021** शनिवार सायं **07-00** बजे तक नरेन्द्र भवन पहूँचना अनिवार्य होगा। अन्य कोई भी सूचना प्राप्त करने के लिए सभा कार्यालय से या आचार्य हरिकिशन वेदालंकार जी से सम्पर्क करें।

निवेदक

विठ्ठल राव आर्य	हरिकिशन वेदालंकार	वेंकट रघुरामुलु
प्रधान सभा	संयोजक	मंत्री सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.- तेलंगाना
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद
दूरभाष : 040-24753827, 24756983, 66758707, 9703066001 E-mail : aryavithalrao@gmail.com, aryapratinidhisabhaaptelangana@gmail.com

मलकपेट स्थित दयानंद उपदेशक विद्यालय में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में प्रदीप जाजू, डॉ. धर्म तेजा, रामचंद्र राजू, सोमनाथ आर्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री डॉ. विट्ठल राव, गुरुनारायण, रघुराम एवं सुनील वर्मा ने आर्य समाज की प्रधान स्व. जयलक्ष्मी आर्य को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

శ్రద్ధాంజలి

శ్రీమతి సుతారి వెంకటమ్మ గారి దేహావసానం

ఆర్య ప్రతినిధి ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ అంతరంగ్ సభ్యులైన శ్రీ యస్. వెంకటరామ రెడ్డి గారి తల్లిగారైన శ్రీమతి సుతారి వెంకటమ్మ గారు 7వ ఏప్రిల్ 2021 రోజున రాత్రి 10.00 గం॥లకు మరణించారు. వారి యొక్క అంతక్రియలు 8వ ఏప్రిల్ 2021 నాడు మధ్యాహ్నం వైదిక విధానాన్ని అనుసరించి జరిగాయి. అంతక్రి యల్లో ఆర్య ప్రతినిధి సభ అధ్యక్షులు శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య గారు మరియు పుస్తకాధ్యక్షులు శ్రీ జొన్నల బసిరెడ్డి గారు పాల్గొన్నారు. స్థానిక ఆర్య సమాజ నాయకులు శ్రీ ఎం. కృష్ణ భగవాన్ (సభ ఉపమంత్రి), శ్రీ సుఖదేవ్ ఆర్య, శ్రీ కె. నారాయణ, పం. రామచరణ్ తదితరులు పాల్గొన్నారు. అంతక్రియల్లో భారీ సంఖ్యలో బంధువులు, మిత్రులు, పురప్రముఖులు పాల్గొన్నారు. ఆర్య ప్రతినిధి పక్షాన ప్రతినిధి సభ కీ॥ శే॥ వెంకటమ్మ గారికి వినమ్ర శ్రద్ధాంజలి. భగవంతుడు వారికి సద్గతిని ప్రసాదించాలని మరియు కుటుంబ సభ్యులకు ధైర్య సాహసాలు ప్రసాదించాలని పరమాత్మునితో ప్రార్థన.

–విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ

जल्दी ही वेब पोर्टल लाञ्च होगा आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना का

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना अपने सारे कार्य-कलापों को डिज़िटलाईज़ करने का निश्चय किया है । सभा का वेब पोर्टल बहुत जल्दी ही लाञ्च होगा । यह पोर्टल प्रान्त से सम्बधित सभी आर्य समाजों की, विद्वान व पुरोहितों की, गुरुकुलों की व अन्य संस्थाओं (पाठशालाएं आदि) की जानकारी देगा अतः ऑनलाइन से (वाट्सऐप से लिंक भेजा जाएगा) सभी महानुभाव व संस्थाएँ अपना-अपना विस्तृत विवरण दें । यू-ट्यूब चॉनल भी प्रारम्भ होने जा रहा है । अधिक से अधिक व्यवहार ऑनलाईन द्वारा किया जाएगा । चूंकि यह चॉनल और वेब विश्वस्तरीय होगा अतः सभी महानुभाव इस ओर ध्यान दे और विवरण भी दें ।

త్వరలో ఆర్య ప్రతినిధి ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ యొక్క వెబ్‌పోర్టల్ మరియు యూ ట్యూబ్ చానల్ ప్రారంభం

ఆర్య ప్రతినిధి సభ తన కార్యకలాపాలను డిజిటలైజ్ చేయుటకు నిశ్చయించినది కావున అతి త్వరలోనే వెబ్‌పోర్టల్ మరియు యూ ట్యూబ్ చానల్ ప్రారంభం కాబోతున్నది. దీనిని ఆర్య సమాజాలు, పురోహితులు, ఆచార్యులు మరియు గురుకులాలు, పాఠశాలలు కోరిన వివరణను ఆన్‌లైన్ ద్వార సమర్పించి ఉపయోగించుకోవచ్చును. లింక్‌ను తమరి వాట్సప్‌కు పంపించుచున్నాము. ఇది రాను-రాను గ్లోబల్ వెబ్‌పోర్టల్‌గా మారబోతున్నది కావున అందరూ దీనిని ఉపయోగించు కోవాలని మనవి.

आर्य समाज का मनाया गया स्थापना दिवस

दो पुस्तकों का किया हुआ लोकार्पण

पं. नरेन्द्र भवन में आर्य प्रतिनिधि सभा, आप्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में आयोजित आर्य समाज के १४६वें स्थापना दिवस कार्यक्रम का दृश्य ।

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में पं. नरेन्द्र भवन में आर्य समाज का १४६वाँ स्थापना दिवस मनाया गया ।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, अवसर पर हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के प्रथम अधिनायक महात्मा नारायण स्वामी द्वारा लिखित 'कर्तव्य दर्पण' व डॉ. किशोरीलाल व्यास कृत 'युग द्रष्टा स्वामी दयानंद' पुस्तक का लोकार्पण आचार्य आनंद प्रकाश (आर्य शोध संस्थान, अलियाबाद, मेड़चल) द्वारा किया गया । गौरतलब है कि आचार्य आनंद प्रकाश ने पिछले ५० वर्षों में संस्कृत भाषा के अनेक ग्रंथों की रचना की । हाल में आचार्य आनंद प्रकाश ने १०५५ पृष्ठों के 'आयुर्वेद निर्वचन कोष' ग्रंथ का लेखन और प्रकाशन किया । अवसर परग्रंथ का भी लोकार्पण किया गया । डॉ. किशोरीलाल व्यास (पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ने अपनी पुस्तक में संक्षिप्त में स्वामी दयानंद जी के जीवन पर प्रकाश डाला है । इसके अलावा आर्य समाज, लालागुड़ा के सौजन्य से प्रकाशित आचार्य विश्वश्रवा द्वारा अनुवदित गोकरुणानिधि तेलुगु संस्करण का लोकार्पण किया गया ।

कार्यक्रम में आचार्या नीरजा व आचार्य भवभूति ने अपने विचार व्यक्त किए । आचार्य आनंद प्रकाश ने अपने संबोधन में कहा कि आयुर्वेद में अनेक विभाग है । यह विश्व का एक अद्भुत चिकित्सा ग्रंथ है । संपूर्ण ग्रंथ संस्कृत में है । भविष्य में इसका हिन्दी में अनुवाद किया जाएगा । आचार्या नीरजा ने कहा कि भारतीय परम्परानुसार गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली बहुत ही आवश्यक है । कार्यक्रम की अध्यक्षता सभाके प्रधान विट्ठल राव आर्य की । सभा के मंत्री वेंकट रघुरामुलू ने सभी का स्वागत किया उप-प्रधान हरिकिशन वेदालंकार ने सभी का आधार जताया । शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ ।

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 18-04-2021 Registered-Reg. No. HD/783/2021-23 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్షపత్రిక
Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc., LL.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone No. : 040-66758707, 24753827, Fax : 040-24557946.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ

To,

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. - తెలంగాణ ఆధ్వర్యంలో

పురోహిత
మరియు
సిద్ధాంత ప్రశిక్షణ శివిరము

తేది 24 ఏప్రిల్ 2021 నుండి 9 మే 2021 ఆదివారము వరకు

స్థలము : పం. నరేంద్ర భవన్, రాజమొహల్లా, నారాయణగూడ, హైదరాబాద్.

వయస్సు 21 నుండి 61 సంవత్సరములు గల వారు ఈ శివిరములో పాల్గొన వచ్చును. శివిరములో పాల్గొనే వారు స్త్రీ, పురుషులు మరియు కుటుంబము గల వారు ఉండ వచ్చును. ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఈ శివరమును ప్రత్యేకంగా నిర్వహించుచున్నది కావున ఆసక్తి గలవారు ప్రతి వ్యక్తి **రూ॥ 500/-** సభ కార్యాలయంలో చెల్లించి తమ పేరును నమోదు చేసుకో గలరు. పేర్లను నమోదు చేసుకున్న వారు మాత్రమే శివిరములో పాల్గొనుటకు అర్హులు. శిబిరంలో పాల్గొను వారు 15 రోజులు శిబిర స్థానంలోనే అనివార్యముగా ఉండవలసి ఉంటుంది. కావున అవసరమైన వస్తువులను తమ వెంట తెచ్చుకోగలరు.

శిబిర సంయోజకులు	: శ్రీ హరికిషన్ జి వేదాంలంకార్, ఉపప్రధాన్ సభ
ప్రశిక్షక ఆచార్యులు	: డా॥ వసుధా శాస్త్రీ గారు
	శ్రీ పం. అరవింద్ శాస్త్రీ గారు, ఆచార్య విశ్వశ్రవః గారు
	ఆచార్య సుమేధ గారు, ఆచార్య ప్రియదత్త్ శాస్త్రీ గారు
	ఆచార్య వేదమిత్ర గారు, ఆచార్య సత్యవ్రత్ గారు

ప్రాంతీయ, ఇతర ప్రాంత్రీయ మరియు జాతీయ ఆచార్యులు ప్రశిక్షణ ఇవ్వగలరు. శిబిరములో పాల్గొను వారు అనివార్యమైన వస్తువులతో తేది 24-4-2021 శనివారము సాయంత్రం 7-00 గం॥ల వరకు పం. నరేంద్ర భవన్, రాజమొహల్ల చేరుకోగలరు. ఇతర సమాచారం కొరకు సభ కార్యాలయమును మరియు ఆచార్య హరికిషన్ వేదాలంకార్ గారితో సంప్రదించగలరు.

భవదీయ

విఠల్ రావు ఆర్య	హరికిషన్ వేదాలంకార్	వెంకట రఘురాములు
ప్రధాన్ సభ	సంయోజకులు	మంత్రి సభ

ఆర్య ప్రతినిది సభ ఆ.ప్ర. -తెలంగాణ

మహర్షి దయానంద మార్గ్, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్.
ఫోన్ : 040-24753827, 24756983, 66758707, 9703066001, E-mail : aryavithalrao@gmail.com

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.
Editor : Sri Vithal Rao Arya • E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.
సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. -తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र. -तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095.